हम कहीं और हमारी आत्मा कहीं और–1

संकलनकर्ता
सुषमा गुप्ता

Book Title: Hum Kahin Aur Hamari Aatma Kahin Aur-1 (Soul Somewhere Else-1)
Cover Page picture : Egg
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: sushmajee@yahoo.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm
To read many such stories : https://www.scribd.com/sushma_gupta_1

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of the World

विंडसर, कैनेडा

दिसम्बर 2018

Contents

सीरीज़ की भूमिका 4

हम कहीं और हमारी आत्मा कहीं और–1 5

1 बिना आत्मा का शरीर 7

2 जानवरों का राजा 19

3 तीन चिकोरी इकट्ठा करने वाले 32

4 एक बड़े शरीर वाला आदमी जिसके शरीर में दिल ही नहीं था 44

5 एक गरीब के बेटे जीरिया की कहानी 62

6 राक्षस का भेद 75

7 मेंढकी राजकुमारी 83

8 दो समुद्री सौदागर 100

सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुॅचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **1500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **400** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहॅा तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" नाम की सीरीज़ के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
दिसम्बर **2018**

हम कहीं और हमारी आत्मा कहीं और–1

बच्चों क्या तुमने अपने बचपन में कभी कोई ऐसी कहानी सुनी है जिसमें लोगों के शरीर कहीं और होते थे और उनकी आत्मा कहीं और होती थी। ऐसे लोगों को मारना बहुत मुश्किल होता था जब तक कि मारने वाले को यह पता न हो कि इसकी आत्मा कहाँ है। क्योंकि वह मारने वाला तो अपनी तीर या तलवार से उसके शरीर को मारता रहता है पर उसकी आत्मा उसके शरीर में न होने की वजह से वह मरता नहीं।

दूसरी तरफ क्योंकि उसकी आत्मा उसके शरीर में नहीं होती तो उसको मारने के लिये उसका सामने होना भी जरूरी नहीं है। उस आदमी को जहाँ उसकी आत्मा है वहीं से मारा जा सकता है। है न यह मजेदार बात। पर सामान्य तरीके से यह राक्षसों के साथ अक्सर होता है आदमियों के साथ नहीं। पर बहुत सारी लोक कथाओं को पढ़ने से लगा कि ऐसा कभी कभी आदमियों के साथ भी होता है।

आज इस पुस्तक में हम कुछ ऐसी ही लोक कथाऐं दे रहे हैं जिनमें लोगों या राक्षसों की आत्मा कहीं और है और उनके शरीर कहीं और। ये लोक कथाऐं बहुत हैं सो हमने इनको दो भागों में बाँट दिया है। यह इसका पहला भाग प्रस्तुत है जिसमें भारत के अलावा दूसरे देशों की लोक कथाऐं दी गयी हैं। भारत की ऐसी लोक कथाऐं इसके दूसरे भाग में प्रस्तुत की जायेंगी।

इन कथाओं को पढ़ो और देखो कि ऐसे लोगों को मारने वालों ने उन्हें कैसे मारा। ये सारी लोक कथाएँ हमने तुम्हारे लिये बहुत सारी जगहों से खास तौर पर इकट्ठी की हैं। पढ़ो और इनका आनन्द लो।

1 बिना आत्मा का शरीर[1]

यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि इटली में एक विधवा स्त्री रहती थी जिसके एक बेटा था। उसका नाम था जैक[2]। जब वह **13** साल का हुआ तो वह घर छोड़ कर दुनियॉ में अपनी किस्मत आजमाना चाहता था।

उसकी मॉ ने उससे पूछा — "बेटा, तुम ऐसा कैसे सोचते हो कि अभी दुनियॉ में जा कर तुम कुछ कर सकते हो? तुम अभी बच्चे हो। जब तक तुम इस लायक न हो जाओ कि हमारे घर के पीछे लगा पाइन का पेड़[3] एक ही बार की ठोकर से गिरा सको तब तक तुमको बाहर नहीं जाना चाहिये।"

यह सुन कर जैक रोज सुबह उठ कर दौड़ता और दौड़ कर अपने दोनों पैरों से उस पाइन के पेड़ को मारता पर वह एक इंच भी हिल कर नहीं देता बल्कि वह खुद ही पीछे को पीठ के बल गिर पड़ता।

---

[1] Body Without Soul (Story No 6) – a folktale from Riviera Ligure di Ponente, Italy, Europe. Adapted from the book "Italian Folktales" by Italo Calvino. Translated by George Martin in 1980.

[2] Jack – the name of the boy

[3] Pine trees are normally evergreen trees used as Christmas trees. They are of several types – see its one type above in picture.

आखिर एक दिन जब उसने अपनी पूरी ताकत लगा कर उस पेड़ को धक्का दिया और वह जमीन पर आ गिरा और उसकी जड़ें हवा में दिखायी देने लगीं तो जैक तुरन्त ही भागा भागा अपनी मॉ के पास गया और बोला — "देखो मॉ, आज मैंने वह पाइन का पेड़ नीचे गिरा दिया।"

उसकी मॉ ने वह गिरा हुआ पाइन का पेड़ देखा तो बोली — "मेरे बेटे, अब तुम जा सकते हो और जो तुम्हारे मन में आये वह कर सकते हो।"

सो जैक ने अपनी मॉ को विदा कहा और दुनियॉ में अपनी किस्मत आजमाने चल दिया। काफी दिनों तक चलने के बाद वह एक ऐसे शहर में आया जिसके राजा के पास एक घोड़ा था जिसका नाम था रौनडैलो[4]।

अभी तक उस घोड़े पर कोई सवारी नहीं कर सका था। लोग उस पर चढ़ने की बराबर कोशिश करते रहे पर वे उस पर अभी तक तो कभी चढ़ नहीं पाये थे। जब भी कोई उसके ऊपर चढ़ने की कोशिश करता तो वह घोड़ा बार बार उसको नीचे गिरा देता था।

जैक भी उस घोड़े को देखने गया तो उसने उसको देखते ही पहचान लिया कि वह घोड़ा अपने साये से डरता था[5] सो जैक ने

[4] Rondello – the name of the horse

[5] This is a similar incident shown in Mahaabhaarat Serial. Bheeshm in his adulthood controlled a horse in the same way – now which incident happened first?

खुद उसके ऊपर चढ़ने का प्रस्ताव रखा। राजा ने उसको सावधानी बरत कर उस घोड़े पर चढ़ने की इजाज़त दे दी।

वह उस घुड़साल में गया जहॉ पर वह घोड़ा बॅधा हुआ था। वहॉ उसने घोड़े से कुछ बात की, उसको थपथपाया और फिर अचानक ही उसके ऊपर कूद कर चढ़ गया और चाबुक मार कर उसको बाहर धूप में ले गया। इस तरह से न तो वह अपनी परछॉई ही देख सका और न ही वह अपने सवार को नीचे गिरा सका।

जैक ने घोड़े की लगाम आराम से पकड़ ली, अपने घुटनों से घोड़े को दबाया और उसको ले कर उड़ चला। पन्द्रह मिनट में ही वह घोड़ा उसका मेमने की तरह पालतू हो गया। पर वह केवल जैक का ही पालतू था। वह अभी भी किसी और को अपने ऊपर नहीं चढ़ने देता था।

उस दिन के बाद से जैक राजा के यहॉ काम करने लगा। राजा भी उसको इतना पसन्द करने लगा था कि राजा के दूसरे नौकर उससे जलने लगे। एक दिन कुछ नौकरों ने मिल कर उसको मारने का जाल बिछाया।

इस राजा के एक बेटी थी। जब वह बहुत छोटी थी तो उसको बिना आत्मा का शरीर[6] नाम का एक जादूगर उठा कर ले गया था और तबसे उसके बारे में किसी ने कुछ भी नहीं सुना था।

[6] Translated for the words “Body Without Soul” named sorcerer

इस जाल के अनुसार वे नौकर लोग राजा के पास गये और बोले — "यह जैक अपनी बहुत डींगें हॉकता है तो क्यों न उसको राजकुमारी को आजाद कराने का काम सौंप दिया जाये।"

राजा के यह बात समझ में आ गयी। उसने जैक को बुलाया और उसको राजकुमारी का सारा किस्सा बताया। जैक को यह सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि राजा के कोई बेटी भी थी।

ऐसा इसलिये हुआ कि जबसे उस जादूगर ने उस राजकुमारी को भगाया था तबसे किसी की यह हिम्मत नहीं हुई थी कि कोई उसके बारे में बात भी करे क्योंकि इस बात से राजा बहुत दुखी होता था।

कुछ दिन बाद तो राजा ने यहॉ तक कह दिया कि अगर कोई उसको वापस ला सकता है तो वापस ले आये नहीं तो उसकी बात भी करने की जरूरत नहीं है। उस दिन के बाद से राजा को शान्ति नहीं थी। इसलिये जैक को इस बात का कोई पता ही नहीं था।

जैक ने दीवार पर लगी हुई एक जंग लगी हुई तलवार मॉगी और अपने रौनडैलो पर सवार हो कर राजकुमारी की खोज में चल दिया।

जब वह जंगल पार कर रहा था तो वहॉ उसको एक शेर मिला। वह शेर उसको रुकने का इशारा कर रहा था। यह देख कर वह कुछ परेशान सा हो गया पर फिर भी वहॉ से उसको भागना भी अच्छा नहीं लगा सो वह अपने घोड़े पर से उतरा और उस शेर से पूछा कि वह उससे क्या चाहता था।

शेर बोला — "जैक, जैसा कि तुम देख रहे हो यहाँ हम केवल चार लोग हैं – एक मैं, एक कुत्ता, एक यह गरुड़[7] और एक यह चींटी।

हमारे पास यह एक मरा हुआ गधा है जिसे हम आपस में बाँटना चाहते हैं पर बाँट नहीं पा रहे हैं। क्योंकि तुम्हारे पास तलवार है इसलिये तुम इस जानवर को काट कर हम सबको हमारा हिस्सा आसानी से दे सकते हो।"

जैक ने गधे का सिर काटा और चींटी को दिया और बोला — "यह लो, इस सिर में तुम आराम से रह सकती हो और इसमें से अपना खाना भी खा सकती हो।"

फिर उसने गधे के खुर काटे और कुत्ते को दे दिये — "लो ये खुर तुम लो। तुम इन खुरों को चाहे जब तक चबा सकते हो।"

उसके बाद उसने गधे के शरीर के अन्दर का हिस्सा आँत आदि निकाले और गरुड़ को दे दिये — "लो गरुड़, तुम इस गधे का यह अन्दर का हिस्सा लो। तुम इनको पेड़ पर ले जा सकते हो और वहाँ बैठ कर आराम से खा सकते हो।"

बाकी बचा हिस्सा उसने शेर को दे दिया जो उन चारों में से उसको मिलना ही चाहिये था।

[7] Translated for the word "Eagle" – see its picture above.

फिर वह अपने घोड़े के पास लौट आया और उस पर सवार हो कर अपने रास्ते चल दिया कि उसने पीछे से किसी को अपना नाम पुकारते हुए सुना।

उसने सोचा — "ओह, लगता है कि गधे को बॉटने में मुझसे कहीं कोई गलती हो गयी है।" पर ऐसा कुछ नहीं था।

शेर बोला — "तुमने हमारा बहुत बड़ा काम किया है और तुमने यह काम बहुत ही न्यायपूर्वक किया है। जैसे एक अच्छा काम किसी दूसरे अच्छे काम का बीज होता है तो मैं तुमको अपना एक पंजा देता हूँ। तुम जब भी इसको पहनोगे तो यह तुमको दुनियॉ के सबसे ज़्यादा भयानक शेर में बदल सकता है।"

इस पर कुत्ता बोला — "मैं तुमको अपनी मूँछ का एक बाल देता हूँ। जब भी तुम इसको अपनी नाक के नीचे रखोगे तो तुम दुनियॉ के सबसे तेज़ भागने वाले कुत्ते बन जाओगे।"

इसके बाद गरुड़ बोला — "यह मेरे पंखों में से एक पंख ले जाओ जो तुमको दुनियॉ का सबसे बड़ा और ताकतवर गरुड़ बना देगा।"

चींटी बोली — "मैं तुमको अपनी एक छोटी सी टॉग देती हूँ। जब भी तुम इसको अपने शरीर पर रखोगे तो तुम एक चींटी बन जाओगे – इतनी छोटी सी चींटी कि तुमको कोई देख भी नहीं पायेगा – आतशी शीशे[8] से भी नहीं।"

[8] Translated for the word "Microscope"

जैक ने वे चारों चीज़ें ले लीं, चारों को धन्यवाद दिया और वहॉ से चल दिया। उसे उन जानवरों की भेंटों पर विश्वास नहीं था कि वे काम करेंगी भी या नहीं।

यही सोचते हुए कि कहीं जानवरों ने उसके साथ कोई मजाक न किया हो वह आगे जा कर एक ऐसी जगह रुक गया जहॉ से वह उनको दिखायी नहीं दे सकता था।

वहॉ उसने एक एक करके सब भेंटों को जॉचा – पहले वह शेर बना, फिर कुत्ता बना, फिर गरुड़ बना और फिर चींटी बना। सब कुछ जादू की तरह ठीक काम कर रहे थे। यह देख कर वह बहुत खुश हुआ और आगे चल दिया।

जंगल के उस पार एक झील थी। जंगल पार करके वह उस झील के पास आ गया। उस झील के किनारे पर ही उस बिना आत्मा के शरीर जादूगर का महल था।

वहॉ आ कर जैक ने अपने आपको गरुड़ में बदला और उड़ कर उस बिना आत्मा के शरीर जादूगर के महल के एक कमरे की एक बन्द खिड़की पर जा कर बैठ गया। वहॉ जा कर वह एक छोटी सी चींटी में बदल गया और उस कमरे की बन्द खिड़की से हो कर उस कमरे में घुस गया।

वह एक सुन्दर सा सोने का कमरा था जहॉ छत वाला एक पलंग पड़ा था और उस पलंग पर एक राजकुमारी सो रही थी। चींटी के रूप में ही वह राजकुमारी के ऊपर घूमने लगा।

वह उसके गाल पर भी गया। वह उसके ऊपर तब तक घूमता रहा जब तक कि वह जाग नहीं गयी। फिर उस लड़के ने अपने ऊपर से चींटी की वह छोटी टॉग हटा दी तो राजकुमारी ने अपने सामने एक बहुत सुन्दर नौजवान को खड़ा पाया।

यह सब देख कर वह आश्चर्य से कुछ बोलने ही वाली थी कि जैक ने अपने मुँह पर उँगली रख कर उसको चुप रहने का इशारा करते हुए कहा — "डरो नहीं। मैं तुमको यहॉ से आजाद कराने आया हूँ। तुमको उस जादूगर से बस यह मालूम करना है कि वह किस तरह से मर सकता है।"

उसने अभी इतना ही कहा था कि उसको किसी के आने की आहट सुनायी दी सो वह फिर से चींटी बन कर वहीं एक कोने में छिप गया।

जब वह जादूगर आया तो राजकुमारी ने उससे बड़े प्यार से बात की। उसको अपने पॉवों के पास बिठाया और उसका सिर अपनी गोद में रख लिया।

फिर वह बोली — "मेरे प्रिय जादूगर, मैं जानती हूँ कि तुम बिना आत्मा का शरीर हो और इसी लिये तुम मर नहीं सकते पर मुझे हमेशा डर लगा रहता है कि कोई भी कभी भी तुम्हारी आत्मा को ढूँढ लेगा और फिर तुमको मार देगा।"

जादूगर यह सुन कर बहुत ज़ोर से हॅसा और काफी देर तक हॅसता ही रहा। फिर बोला — "तुमको इससे डरने की बिल्कुल

जरूरत नहीं है मेरी रानी। मैं तुमको इसका भेद बताता हूँ। क्योंकि तुम यहाँ जेल में बन्द हो और तुम मुझे धोखा भी नहीं दे सकतीं इसी लिये मैं तुम्हें यह बात बता रहा हूँ।

मुझे मारने के लिये एक बहुत ही ताकतवर शेर चाहिये जो जंगल में रह रहे काले शेर को मार सके। उस मरे हुए काले शेर के पेट में से एक काला कुत्ता कूद कर बाहर आयेगा। वह कुत्ता भी इतनी तेज़ी से बाहर कूदेगा कि कोई सबसे ज़्यादा तेज़ भागने वाला कुत्ता ही उसको पकड़ सकता है।

फिर उस कुत्ते को मारना पड़ेगा। उस मरे हुए कुत्ते में से एक गरुड़ उड़ेगा जो दुनियाँ के सबसे ज़्यादा तेज़ उड़ने वाले गरुड़ों में से एक होगा। इसलिये उसको भी कोई नहीं पकड़ सकेगा।

पर अगर उसको किसी ने पकड़ लिया और उसे मार दिया तो उसको उसके पेट से उसे एक अंडा निकालना पड़ेगा जिसको मेरी भौंह के ऊपर तोड़ना पड़ेगा।

उस अंडे के टूटते ही उसमें से मेरी आत्मा निकल कर भाग जायेगी और मैं मर जाऊँगा। अब बताओ क्या तुम मेरे बारे में अभी भी चिन्तित होगी?"

"नहीं नहीं। अब मुझे तुम्हारे मरने की बिल्कुल भी चिन्ता नहीं है क्योंकि इस तरह से तो तुमको कोई मार ही नहीं सकता।"

जैक ने यह सब उस कोने में बैठे बैठे सुन लिया। जादूगर के जाने के बाद वह वहॉ से चींटी के रूप में ही खिड़की से बाहर निकल गया और गरुड़ बन कर जंगल की तरफ उड़ गया।

वहॉ जा कर वह शेर में बदल गया और काले शेर को ढूँढने चला। काला शेर उसको जल्दी ही मिल गया। वह काला शेर काफी ताकतवर था पर जैक तो सबसे ज़्यादा ताकतवर शेर था सो उसने उस काले शेर को दबोच लिया और मार दिया। जैसे ही शेर मरा तो किले में जादूगर का सिर चकराने लगा।

शेर को मार कर जैक ने उसका पेट फाड़ा तो उसमें से एक तेज़ भागने वाला काला कुत्ता निकल कर भागा। जैक ने तुरन्त ही अपने आपको सबसे तेज़ भागने वाले कुत्ते में बदला और उस काले कुत्ते के पीछे भाग लिया।

उसने उस काले कुत्ते को भी जल्दी ही पकड़ लिया और उस पर कूद पड़ा। दोनों लुढ़कने लगे और एक दूसरे को काटने लगे पर आखीर में जैक ने उस काले कुत्ते को भी मार दिया। कुत्ते को मार कर जैक ने उसका पेट फाड़ा तो एक काला गरुड़ उसके पेट में से निकल कर उड़ गया।

जैक भी जल्दी से गरुड़ बन गया और उसके पीछे पीछे उड़ चला। उस काले गरुड़ को मार कर उसने उसके पेट में से काला अंडा निकाल लिया। अंडा निकालते ही जादूगर को किले में बुखार आ गया और वह अपने बिस्तर में सिकुड़ा सा लेट गया।

गरुड़ के पेट से अंडा निकाल कर जैक आदमी बन गया और वह अंडा ले कर राजा की बेटी पास वापस आ गया। राजा की बेटी उस अंडे को देख कर बहुत खुश हो गयी।

उसने पूछा — "पर तुमने यह सब किया कैसे?"

"इसमें कोई ऐसी खास बात नहीं थी। मैंने तो अपना काम कर दिया बस अब तुम्हारा काम बाकी है।"

राजा की बेटी वह अंडा ले कर जादूगर के सोने के कमरे में घुसी और उससे पूछा — "तुमको कैसा लग रहा है जादूगर?"

"उफ तुमने तो मुझे धोखा दे दिया।"

"देखो न मैं तुम्हारे लिये यह मॉस का पानी[9] ले कर आयी हूँ। इसे थोड़ा सा पी लो तो तुमको आराम मिलेगा और थोड़ी ताकत भी आ जायेगी।"

यह सुन कर जादूगर उठ कर बैठा हो गया और वह मॉस का पानी पीने के लिये झुका तो राजा की बेटी बोली — "लाओ इसमें मैं एक अंडा तोड़ कर और डाल दूँ इससे तुमको और ज़्यादा ताकत आयेगी।"

कह कर राजा की बेटी ने वह काला अंडा उस जादूगर की भौंह के ऊपर तोड़ दिया और वह बिना आत्मा का शरीर वहीं की वहीं मर गया।

[9] Translated for the word "Broth" – to make meat broth meat is boiled in some water and that water is used for other purposes. It is supposed to have many of meat qualities of the meat to give some strength.

जैक राजा की बेटी को ले कर राजा के महल आ गया और उसको उसके पिता को सौंप दिया। सब लोग राजकुमारी को देख कर बहुत खुश हो गये।

पर वे नौकर जिनकी यह चाल थी जैक को अपने काम में सफल देख कर केवल अपना मन मसोस कर रह गये। कुछ कर नहीं सके। उनकी चाल फेल हो गयी थी।

बाद में राजा ने अपनी बेटी की शादी जैक से कर दी।

2 जानवरों का राजा[10]

यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के इटली देश में कही सुनी जाती है।

एक बार एक आदमी था जिसकी पत्नी मर गयी थी। उसके एक बेटी थी जो बहुत सुन्दर थी पर कोई उस बेचारी की देखभाल करने वाला नहीं था सो उसने तय किया कि वह दूसरी शादी करेगा।

पर जब उसने दूसरी शादी की तो उसकी दूसरी पत्नी तो बहुत ही खराब थी और वह अपने पति की बेटी स्टैलीना[11] को बहुत ही बुरे ढंग से रखती थी।

एक दिन स्टैलीना ने अपने पिता से कहा — "पिता जी, यहॉ रहने और और हमेशा दुख सहते रहने की बजाय मैं गॉव में रहना ज़्यादा पसन्द करूँगी। मैं गॉव जा रही हूँ।"

पिता बोला — "बेटी, थोड़ी देर धीरज रखो।"

पर एक दिन उसकी सौतेली मॉ ने एक कटोरा तोड़ने पर उसको एक चॉटा मारा तो स्टैलीना से और सहन नहीं हुआ और वह घर छोड़ कर चली गयी।

वह पहाड़ों में चली गयी। वहॉ उसकी एक बुआ रहती थी। वह एक परी की तरह थी पर वह बहुत गरीब थी। वह स्टैलीना को देख कर बोली — "बेटी, मैं बहुत गरीब हूँ। मुझे तुझे भेड़ों को

[10] The King of the Animals (Story No 52) – a folktale from Italy from its Bologna area.
Adapted from the book: "Italian Folktales", by Italo Calvino. Translated by George Martin in 1980.
[11] Stellina – the name of the daughter

चराने के लिये भेजना पड़ेगा पर मैं तुझको एक बहुत ही कीमती चीज़ दे रही हूँ।"

कह कर उसने स्टैलीना को एक अँगूठी दी और कहा — "बेटी, तू अगर कभी भी किसी भी परेशानी में हो तो इस अंगूठी को अपने हाथ में पकड़ लेना और अपनी परेशानी बोलना तो तू उस परेशानी से बाहर निकल आयेगी।"

एक सुबह जब स्टैलीना घास के मैदान में अपनी भेड़ें चरा रही थी तो उसने एक सुन्दर नौजवान को अपनी तरफ आते देखा। वह उसके पास आ कर बोला — "तुम भेड़ चराने के लिये बहुत ज़्यादा सुन्दर हो। चलो तुम मेरे साथ चलो मैं तुमसे शादी कर लूँगा और फिर तुम एक राजकुमारी की तरह रहोगी।"

यह सुन कर स्टीलीना का चेहरा लाल हो गया और वह तुरन्त ही उसको कोई जवाब नहीं दे पायी। पर बाद में उस नौजवान ने उसको अपने साथ जाने पर मना लिया।

वे लोग पास में खड़ी एक गाड़ी में चढ़े और वह गाड़ी बिजली की सी तेज़ी से वहाँ से चल दी। वे करीब करीब सारा दिन चलते रहे। शाम को वे एक बहुत ही सुन्दर महल के सामने आ कर रुक गये।

वह नौजवान बोला — "आओ, अन्दर आ जाओ।" कह कर वह उसको महल के अन्दर ले गया और महल दिखाता हुआ बोला

— "आज से यह महल तुम्हारा है। तुमको जो चाहिये वह तुम माँग लेना वह तुमको मिल जायेगा। अब मैं अपना काम देखने जाता हूँ। अब हम कल सुबह मिलेंगे।" यह कह कर वह चला गया।

आश्चर्य से भरी स्टैलीना के मुँह से कोई आवाज ही नहीं निकली। तभी उसको महसूस हुआ कि कोई उसको हाथ पकड़ कर कहीं ले जा रहा है पर वहाँ उसको दिखायी कोई नहीं दिया।

वह ले जाने वाला उसको एक बहुत ही बढ़िया सजे कमरे में ले गया जहाँ उसके पहनने के लिये कपड़े और गहने रखे थे। वहाँ उसके पुराने कपड़े उतारे गये और उसको नये कपड़े और गहने पहनाये गये और उसको एक कुलीन स्त्री की तरह सजाया गया।

फिर वे उसको एक और कमरे में ले गये जहाँ गरमागरम खाना उसका इन्तजार कर रहा था। वह वहाँ मेज पर बैठ गयी और खाना खाने लगी। उसकी प्लेटें बदलती जाती थीं और नया नया खाना आता जाता था पर वहाँ भी उसको उन प्लेटों को लाने वाला कोई दिखायी कोई नहीं दे रहा था।

जब वह खाना खा चुकी तो उसको महल दिखाने ले जाया गया। कुछ कमरे वहाँ पीले रंग में सजे थे और कुछ लाल रंग में। उनमें दीवान लगे थे, कुरसियाँ थीं और बहुत सारी सुन्दर सुन्दर सजाने वाली चीज़ें रखी थीं।

महल के पीछे एक बहुत सुन्दर बागीचा था। उसमें बहुत सारे किस्म के जानवर थे – कुत्ता, बिल्ली, गधा, मुर्गी ही नहीं बल्कि वहाँ

बड़े बड़े मेंढक भी थे। स्टैलीना को वे सब आदमियों के एक समूह की तरह लगे जो एक साथ बातें कर रहे हों।

स्टैलीना तो यह सब देखती की देखती ही रह गयी। वह उन सबको तब तक देखती रही जब तक अँधेरा नहीं हो गया। फिर वह सोने चली गयी।

उसको एक ऐसे कमरे में ले जाया गया जो राजकुमारियों के सोने के लायक सजा हुआ था। वहाँ एक बहुत ही बढ़िया पलंग पड़ा था।

वहाँ उसको किसी ने कपड़े बदलने में सहायता की। उसके लिये रात के सोने के कपड़े पहनने के साथ साथ एक लैम्प भी लाया गया और एक जोड़ी स्लिपर भी लाये गये।

वह बिस्तर पर लेट गयी और बस फिर सब कुछ शान्त हो गया। वह सो गयी और जब वह उठी तो सुबह हो गयी थी। उसने सोचा कि मैं घंटी बजाती हूँ और देखती हूँ कि कोई आता है कि नहीं।

पर जैसे ही उसने घंटी बजाने के लिये घंटी को छुआ तो एक चाँदी की ट्रे वहाँ आ गयी जिसमें कौफी और केक रखी हुई थी। उसने कौफी पी और उठ गयी। उसने कपड़े पहने तो किसी ने उसके बाल सँवार दिये। इस तरह उसकी एक राजकुमारी की तरह से सेवा हो रही थी।

बाद में वह नौजवान आया और उसने उससे पूछा — "क्या तुम ठीक से सोयीं? क्या तुम खुश हो?"

स्टैलीना बोली — "हॉ, मैं ठीक से सोयी।"

नौजवान ने स्टैलीना का हाथ पकड़ा और कुछ पल बाद कहा "गुड बाई" और चला गया।

यह उस नौजवान का रोज का तरीका था और स्टैलीना उसको दिन में एक बार बस इसी समय देखती थी।

दो महीने बाद वह ऐसे तरीके से तंग आ गयी। एक सुबह जब वह नौजवान चला गया तो स्टैलीना ने सोचा कि मैं आज थोड़ा बाहर घूम कर आती हूँ। उसके मुँह से ये शब्द निकले भी नहीं थे कि किसी ने उसको एक टोपी, एक पंखा और एक छाता[12] ला कर दे दिया।

उसने सोचा "इसका मतलब है कि हर समय मेरे साथ कोई न कोई रहता है जो कुछ भी मैं कहूँ सुनता रहता है। एक बार मुझे तुम्हें देखने दो बस।" पर इसके जवाब में उसे कोई जवाब नहीं मिला और न ही उसे कोई दिखायी दिया।

उसी पल स्टैलीना ने अपनी बुआ की दी हुई अंगूठी को याद किया। अभी तक तो उसको उसने इस्तेमाल करने की सोचा ही नहीं था क्योंकि उसे उसको इस्तेमाल करने की जरूरत ही नहीं पड़ी थी।

[12] Translated for the word "Parasol" – see its picture above.

वह वहॉ से वापस गयी और अपनी ड्रैसिंग टेबिल की ड्रौअर से वह अंगूठी निकाल लायी।

एक बार वह अंगूठी उसके हाथ में आ गयी तो उसने उस अॅगूठी से कहा — "मैं देखना चाहती हूॅ कि मेरी सेवा कौन कर रहा है?"

तुरन्त ही उसके सामने एक दासी आ कर खड़ी हो गयी। उसको देख कर तो स्टैलीना बहुत ही खुश हो गयी। उसके मुॅह से निकला — "कम से कम अब मैं किसी के साथ बात तो कर सकती हूॅ।"

दासी बोली — "धन्यवाद धन्यवाद। आपने मुझे आखिर दिखायी देने लायक बना ही दिया। मैं अब तक जादू के ज़ोर की वजह से किसी को दिखायी ही नहीं देती थी और न ही बोल सकती थी।"

वे दोनों आपस में बहुत अच्छी दोस्त हो गयीं और उन्होंने साथ साथ उस जगह के भेद का पता लगाने का निश्वय किया कि वहॉ क्या चल रहा था। वे बाहर चली गयीं और एक पगडंडी पर चलने लगीं।

वे काफी दूर तक उस पगडंडी पर चलती चली गयीं कि एक जगह वह पगडंडी दो खम्भों के बीच से गुजरती थी। उन दो खम्भों में से एक खम्भे पर लिखा था "पूछो" और दूसरे खम्भे पर लिखा था "और तुमको पता चल जायेगा"।

जिस खम्भे पर "पूछो" लिखा था उसके सामने खड़ी हो कर स्टैलीना बोली — "मुझे यह मालूम करना है कि मैं कहाँ हूँ।"

इस पर दूसरा खम्भा जिस पर लिखा था "और तुमको पता चल जायेगा" बोला — "तुम एक ऐसी जगह हो जहाँ तुम ठीक रहोगी लेकिन ..."

स्टैलीना ने पहले वाले खम्भे से पूछा — "लेकिन क्या?"

पर दूसरे वाले खम्भे ने इसका कोई जवाब नहीं दिया।

दोनों दोस्तों ने सोचा कि यह "लेकिन" तो ठीक नहीं है और वे कुछ चिन्ता करती हुई आगे बढ़ गयीं। चलते चलते वे बागीचे के आखीर तक पहुँच गयीं। आखीर में बागीचे के चारों तरफ चहारदीवारी लगी थी। उस चहारदीवारी के दूसरी तरफ जमीन पर एक नाइट[13] बैठा था।

जब उसने इन दोनों को आते देखा तो उठ कर खड़ा हो गया और उन दोनों से पूछा — "तुम लोग यहाँ कैसे आयीं? सावधान रहना तुम लोग एक बहुत बड़े खतरे में हो। तुम लोग जानवरों के राजा के कब्जे में हो। वह हर किसी को जिस किसी को भी पकड़ लेता है यहाँ ले आता है और एक एक करके मार देता है।"

[13] A knight is a person granted an honorary title of knighthood by a monarch or other political leader for service to the Monarch or country, especially in a military capacity – see its picture above.

यह सुन कर स्टैलीना तो बहुत डर गयी तुरन्त बोली — "तो हम यहॉ से कैसे बच सकते हैं?"

वह नाइट बोला — "मैं तुमको यहॉ से बाहर ले जा सकता हूॅ। मैं भारत के राजा का बेटा हूॅ और दुनियॉ घूम कर अपना समय गुजार रहा हूॅ।

जैसे ही मैंने तुम्हें देखा तो मुझे तुमसे प्यार हो गया इसी लिये मैं यहॉ आ कर बैठ गया कि कभी तो तुम इधर आओगी। मैं तुमको अपने पिता के पास ले चलूॅगा। वह तुम्हारा और तुम्हारी दासी दोनों का ठीक से स्वागत करेंगे।"

स्टैलीना बोली — "ठीक है। मैं तुम्हारे साथ चलूॅगी।"

दासी बोली — "पर अगर यह महल खजाने से भरा है तो इसको इस तरह से छोड़ कर जाना तो बेवकूफी है। जब वह जानवरों का राजा घर में न हो तब हमको यह खजाना अपने हाथों में ले लेना चाहिये और उसके बाद ही यहॉ से भागना चाहिये। कल हम लोग यहीं मिलेंगे और फिर यहॉ से भाग चलेंगे।"

स्टैलीना बोली — "हॉ यह ठीक है। मैं तुम्हारे साथ चलती हूॅ।"

राजकुमार ने पूछा — "और मैं यहॉ खुले में रात कैसे गुजारूॅगा यहॉ तो कोई झोंपड़ी भी नहीं है।"

स्टैलीना बोली — "मैं देखती हूॅ।" उसने अपने छोटे से बटुए में से वह जादू की अॅगूठी निकाली, मुट्ठी में दबायी और बोली —

"मुझे यहॉ पर एक बड़ा सा एक मकान चाहिये, तुरन्त। नौकरों, गाड़ियों, खाने पीने और सोने की सुविधाओं के साथ।"

बस उसका यह कहना था कि उसके सामने वाले घास के मैदान में एक बड़ा सा मकान खड़ा हो गया। मकान बहुत सुन्दर था। राजकुमार ने दोनों लड़कियों को गुड बाई कहा और उस घर में चला गया।

स्टेलीना और उसकी दासी दोनों महल में लौट आयीं। खजाना ढूँढने के लिये उन्होंने उस सारे महल को ऊपर से ले कर नीचे तक छान मारा। फिर उनको तहखाने में जा कर एक कमरा मिला जिसमें बहुत सारे बक्से रखे थे।

स्टैलीना बोली — "यह क्या है। यह तो तहखाने की बजाय एक भंडारघर ज़्यादा लग रहा है। देखते हैं कि इन बक्सों में क्या है।" उन्होंने उन बक्सों के ढक्कन खोल कर देखा तो उन सबमें तो सोना चॉदी हीरे जवाहरात पैसा आदि बहुतायत से भरा पड़ा था।

स्टैलीना ने उस अंगूठी को अपनी मुट्ठी में फिर से दबाया और कहा — "ये सब बक्से भारत के राजकुमार के मकान में पहुँचा दो।"

उसके यह कहते ही वह सारा तहखाना खाली हो गया। सारे बक्से वहॉ से हट कर भारत के राजकुमार के मकान में पहुँच चुके थे।

स्टैलीना और उसकी दासी फिर से उस महल में घूमने लगे कि उनको ऊपर जाती हुई एक छिपी हुई सीढ़ी मिली। वे उससे ऊपर चढ़े तो एक अँधेरी जगह में आ गये।

वहाँ एक आवाज बार बार कह रही थी — "ओह मैं क्या करूँ? ओह मैं क्या करूँ?"

स्टैलीना उस आवाज को सुन कर काँप गयी उसने फिर से अपनी अंगूठी को याद करते हुए उसी आवाज की दिशा में अपने कदम बढ़ाये जहाँ से वह आवाज आ रही थी।

अबकी बार वे एक बड़े कमरे में आ गये। वहाँ एक बड़ी मेज पर बहुत सारे सिर, हाथ, पैर आदि पड़े हुए थे और शरीर के दूसरे हिस्से कुरसियों और दीवारों पर लगे हुए थे।

वे सिर बोल रहे थे "ओह मैं क्या करूँ? ओह मैं क्या करूँ?"

ये सब देख कर दोनों लड़कियाँ बहुत डर गयीं। उनको लगा कि यह जानवरों के राजा का छिपा हुआ घर था।

फिर वहाँ उन्होंने वहाँ भूसे, मक्का, ओट्स[14] आदि से भरा एक भंडारघर देखा तो उन्होंने सोचा कि यह शायद उन जानवरों के खाने के लिये होगा जो उन्होंने बागीचे में देखे थे।

उनको लगा कि शायद वे सब वे ही जानवर होंगे जिनको जानवरों के राजा ने

[14] Oats is a kind of grain – see its picture above.

जानवर बना कर रख लिया होगा। यकीनन वह इन जानवरों को भी खा जायेगा।

उस रात स्टैलीना को रात भर नींद नहीं आयी। सुबह सवेरे हमेशा की तरह जानवरों का राजा उससे मिलने आया तो उसने रोज की तरह उससे पूछा — "क्या वह ठीक से सोयी?"

स्टैलीना ने आज भी उसको वैसी ही नम्रता से जवाब दिया जैसे वह उसको रोज देती थी — "हॉ, बहुत अच्छे से सोयी।"।

वह भी रोज की तरह से बोला — "ठीक है स्टैलीना, गुड बाई, खुश रहो। मैं कल सुबह तुमसे फिर मिलता हूॅ।" और यह कह कर वह वहॉ से चला गया।

उसके जाने के बाद स्टैलीना और उसकी दासी दोनों ऊपर के भंडारघर में गयीं। वहॉ उन्होंने उस भंडारघर की खिड़की खोली और भूसा, मक्का, ओट्स सभी कुछ जो कुछ वहॉ था उस खिड़की से बाहर बागीचे में फेंक दिया जहॉ जानवर घूम रहे थे ताकि वे खाने में लगे रहें और उनके उस महल को छोड़ने के बारे में अपने मालिक को बताने न जा सकें।

जब वे जानवर खा रहे थे तो स्टैलीना और उसकी दासी दोनों ने अपना कुछ सामान लिया और बागीचे की तरफ चल दीं।

जब वे उन दोनों खम्भों के पास आयीं जिन पर लिखा हुआ था "पूछो" और "और तुमको पता चल जायेगा" तो स्टैलीना ने अपनी अंगूठी अपनी मुट्ठी में दबायी और बोली — "मैं तुम्हें हुकुम देती हूॅ

कि तुम मुझे यह बतलाओ कि तुम्हारे उस दिन के "लेकिन" का क्या मतलब था।"

खम्भा बोला — "उस लेकिन का मतलब यह था कि तुम यहाँ से तब तक नहीं भाग सकतीं जब तक कि उस जानवरों के राजा को तुम मार न दो।"

स्टैलीना बोली — "लेकिन यह मैं कैसे करूँ?"

खम्भा फिर बोला — "तुम राजा के कमरे में जाओ। वहाँ

उसकी एक आराम कुरसी रखी है। उसकी गद्दी के नीचे एक अखरोट रखा है। तुम उस अखरोट को निकाल लो। तुम्हारे उस अखरोट को वहाँ से निकालते ही वह राजा मर जायेगा।" और यह कहते ही वह खम्भा टूट कर गिर पड़ा।

स्टैलीना तुरन्त वापस महल में गयी और राजा की आराम कुरसी पर रखी गद्दी के नीचे रखा अखरोट निकाला। जैसे ही उसने वह अखरोट निकाला राजा चिल्लाता हुआ महल की तरफ भागा — "स्टैलीना, तुमने मुझे धोखा दिया। स्टैलीना, तुमने मुझे धोखा दिया।" और वह मर कर नीचे गिर पड़ा।

जैसे ही वह मर कर नीचे गिरा सारे जानवर आदमियों और औरतों में बदल गये। उन सबके ऊपर डाला हुआ जादू टूट चुका था।

वे सब राजा, रानी और राजकुमार थे और उस जानवरों के राजा का डाला हुआ जादू टूटते ही राजा रानी और राजकुमार बन गये थे। उन्होंने सबने स्टैलीना को धन्यवाद दिया।

वे सब उसको अपना राज्य देना चाहते थे और उससे शादी भी करना चाहते थे पर वह बोली — "मुझे अफसोस है कि मैंने अपना दुलहा पहले से ही चुन रखा है और वह मेरा इन्तजार कर रहा है।"

कह कर स्टैलीना और उसकी दासी दोनों उस महल से बाहर निकल गयीं। उनके बाहर निकलते ही सारा महल जल कर खाक हो गया।

राजा, रानी राजकुमार आदि सब अपने अपने घर चले गये। स्टैलीना और उसकी दासी भारत चले गये। वहाँ जा कर स्टैलीना ने भारत के राजकुमार से शादी कर ली और फिर वह सारी ज़िन्दगी खुशी खुशी रही।

3 तीन चिकोरी इकट्ठा करने वाले[15]

हम कहीं और हमारी आत्मा कहीं और की यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से चुनी है।

एक बार एक बहुत ही गरीब स्त्री थी जिसके तीन बेटियॉ थीं। जब चिकोरी[16] का मौसम आता था तो वे तीनों लड़कियॉ अपनी मॉ के साथ चिकोरी इकट्ठा करने के लिये बाहर जाती थीं।

एक दिन जब वे सब चिकोरी इकट्ठा करने गयीं तो मॉ और उसकी दो छोटी बेटियॉ तो आगे निकल गयीं और उसकी बड़ी बेटी थोड़ा पीछे रह गयी। वह एक बहुत बड़े चिकोरी पौधे को देखती रह गयी थी।

उसने उस पौधे को उखाड़ने की बहुत कोशिश की पर वह तो हिल कर ही नहीं दिया। फिर उसने उसको अपनी पूरी ताकत लगा कर उसे खींचा तो वह उखड़ तो आया पर उसकी जड़ के चारों ओर बहुत सारी मिट्टी लगी हुई थी।

---

[15] The Three Chicory Gatherers (Story No 142) – a folktale from Italy from its Calabria area. Adapted from the book "Italian Folktales:", by Italo Calvino". Translated by George Martin in 1980.

[16] Chicory – is a cultivated salad plant with blue flowers and with a good size root which is roasted and powdered for a substitute or additive to coffee. It looks like large thick radish – see its picture above.

और इसी इतनी सारी मिट्टी के बाहर निकल आने की वजह से जमीन में एक बहुत बड़ा गड्ढा बन गया। उसने देखा कि उस गड्ढे की तली में तो एक छिपा हुआ दरवाजा था।

उस लड़की ने वह दरवाजा खोल लिया तो देखा कि वहाँ तो एक कमरा था जहाँ एक राक्षस एक कुरसी पर बैठा हुआ था।

दरवाजा खुलते ही वह चिल्लाया — "ओह यह आदमी के माँस की खुशबू कहाँ से आयी।"

टैरेसा[17] ने उससे प्रार्थना की — "मेहरबानी करके मुझे मत खाओ। हम लोग बहुत गरीब हैं। मैं एक चिकोरी बेचने वाले की बेटी हूँ। और मैं तो यहाँ केवल चिकोरी इकट्ठी करने ही आती हूँ। हमारी गरीबी हमको ऐसा करने पर मजबूर करती है।"

वह राक्षस बोला — "तुम यहीं मेरे पास ठहरो और जब मैं शिकार के लिये जाऊँ तब तुम मेरे घर की देखभाल करो। तुम्हारे लिये मैंने यहाँ खाना रख दिया है। यह एक आदमी का हाथ है जब तुम्हें भूख लगे तो इसे खा लेना।

अगर तुम उसको खा लोगी तो जब मैं वापस आ जाऊँगा तब मैं तुमसे शादी कर लूँगा। पर अगर मैंने देखा कि तुमने उसे नहीं खाया तो मैं तुम्हारा सिर धड़ से अलग कर दूँगा।"

टैरेसा तो यह सुन कर बहुत डर गयी और बोली — "ठीक है जनाब। मैं उसको जरूर खा लूँगी।"

---

[17] Teresa – the name of that eldest daughter

अब राक्षस तो शिकार पर चला गया और वह बेचारी टैरेसा बरतन में रखे उस हाथ को देखने लगी। वह उसको देख देख कर डर रही थी। "आदमी के इस हाथ को मैं कैसे खा सकती हूँ?"

और वह उसको देखती रही देखती रही। उसकी समझ में ही नहीं आ रहा था कि वह क्या करे।

समय गुजरता रहा और अब तो उस राक्षस के आने का समय भी हो गया था। उसने उस हाथ को उठाया और पाखाने में फेंक दिया और उसके ऊपर से एक बालटी पानी डाल कर उसको बहा दिया।

उसने सोचा कि अब तो वह हाथ गया और वह राक्षस यह सोचेगा कि मैंने उसको खा लिया तो मैं बच जाऊँगी। तभी राक्षस वापस आ गया और उसने उससे पूछा — "क्या तुमने वह हाथ खा लिया?"

"हाँ जनाब। मैंने खा लिया। वह इतना बुरा तो नहीं था।"

"मैं अभी देखता हूँ।" कह कर उसने आवाज लगायी — "हाथ, तुम कहाँ हो?"

"मैं पाखाने में हूँ।"

"ओ बेवकूफ, तुम तो कह रही थीं कि तुमने उसे खा लिया पर तुमने तो उसको पाखाने में फेंक दिया?"

कह कर उसने उस लड़की के हाथ पकड़े और एक ऐसे कमरे में ले गया जहाँ बहुत सारे सिर कटे धड़ पड़े थे। वहाँ ले जा कर

उसने उस लड़की का भी सिर काट दिया और उसका धड़ वहीं फेंक दिया।

शाम को जब मॉ चिकोरी इकट्ठा करके घर लौटी और टैरेसा को घर में नहीं देखा तो उसने अपनी दूसरी बेटियों से पूछा — "यह टैरेसा कहॉ है?"

बहिनों ने कहा — "वह एक जगह तक तो हमारे साथ ही थी पर फिर पता नहीं कहॉ गायब हो गयी।"

सो सभी फिर से एक बार चिकोरी इकट्ठा करने की जगह तक उसका नाम पुकारते हुए गये पर उनको अपनी पुकार का कोई जवाब नहीं मिला। वे सभी रोते हुए घर लौटे।

हालॉकि उन सभी ने बेचने के लिये बहुत सारी चिकोरी इकट्ठी कर ली थीं और फिर खाना भी उस पैसे से बहुत सारा खरीद लिया था पर फिर भी उस खाने का हर कौर उनको टैरेसा के बिना जहर लग रहा था। क्योंकि वह खाना उन्होंने टैरेसा को खो कर पाया था।

आखिर जब टैरेसा वापस नहीं आयी तो उसकी बहिन कौनसैटा[18] ने अपनी मॉ से कहा — "मॉ, मैं चिकोरी इकट्ठा करने के लिये उसी जगह फिर से जाना चाहती हूॅ जहॉ मुझे लगा था कि टैरेसा को हमने अपने साथ आखीर में देखा था। शायद वहॉ मुझे उसका कोई निशान मिल जाये।"

[18] Consetta – the name of the second sister

अगले दिन वह वहीं चल दी जहॉ उसने आखिरी बार टैरेसा को देखा था। उसको भी वहॉ चिकोरी का एक बड़ा सा पौधा दिखायी दे गया।

उसने भी उस पौधे को उखाड़ने की कोशिश की पर वह उससे भी नहीं उखड़ रहा था। आखिर बड़ी मुश्किल से उसने उसे उखाड़ ही लिया। उसको भी उस पौधे को उखाड़ने से बने गड्ढे में एक छिपा हुआ दरवाजा दिखायी दिया।

उसने भी उस दरवाजे को खोला और वह भी सीढ़ियों से हो कर नीचे चली गयी। उसने भी वहॉ नीचे एक कमरे में एक राक्षस एक कुरसी पर बैठे पाया।

दरवाजा खुलते ही वह चिल्लाया — "ओह यह आदमी के मॉस की खुशबू कहॉ से आयी।"

कौनटैसा ने भी उससे प्रार्थना की — "मेहरबानी करके मुझे मत खाओ। हम लोग बहुत गरीब हैं। मेरी एक बहिन तो पहले ही खो गयी है।"

वह राक्षस बोला — "तुम्हारी बहिन यहॉ है। उसका सिर काट लिया गया है क्योंकि उसने आदमी का हाथ खाने से इनकार कर दिया था।

अब तुम यहॉ रहो और मेरे घर की देखभाल करो। तुम्हारे खाने के लिये यह आदमी की एक बॉह रखी है। अगर तुम इसे खा

लोगी तो मैं तुमसे शादी कर लूँगा नहीं तो तुम्हारी बहिन की तरह से तुमको भी मार दूँगा।"

"जी जनाब। आप जैसा कहें।"

वह राक्षस यह कह कर शिकार पर चला गया और कौनसैटा वहीं डरी की डरी बैठी रह गयी। उसको पता ही नहीं था कि वह उस बॉह का क्या करे जो एक प्लेट मे रखी थी और मूलियों से सजी हुई थी।

उसने कुछ सोचा और फिर उसको एक गड्ढा खोद कर उसमें गाड़ दिया।

जब राक्षस वापस आया तो उसने उस लड़की से पूछा — "क्या तुमने वह बॉह खा ली?"

"जी जनाब। वह तो बड़ी स्वादिष्ट थी।"

"अभी पता चल जाता है।" कह कर उसने पहले की तरह से फिर आवाज लगायी — "ओ बॉह, तुम कहॉ हो?"

बॉह चिल्लायी — "जमीन के नीचे।"

बस उस राक्षस ने कौनसेटा का सिर भी काट दिया और उसका सिर कटा धड़ उसी कमरे में डाल दिया।

जब कौनसेटा भी वापस नहीं आयी तो दोनों मॉ बेटी तो जैसे टूट ही गयीं। वे रो कर बोलीं — "अब तो दोनों चली गयीं। अब हम क्या करें।"

अब तीसरी और सबसे छोटी बेटी मरीउज़ा[19] अपनी मॉ से बोली — "मॉ, इस तरह से हम अपनी दो बहिनों को नहीं खो सकते। अब मैं उनको ढूँढने के लिये बाहर जाती हूँ।"

उसकी मॉ अब अपनी तीसरी बेटी को खोना नहीं चाहती थी सो उसने उसको जाने से बहुत रोका पर वह नहीं मानी और अपनी दोनों बहिनों को ढूँढने चल दी।

उसको भी वही चिकोरी का बड़ा वाला पौधा मिला। उसने भी उसको उखाड़ा। उसको भी उस पौधे को उखाड़ने से बने हुए गड्ढे में छिपा हुआ दरवाजा मिला और जब उसने उस दरवाजे को खोला तो नीचे वाले कमरे में उसको भी एक राक्षस कुरसी पर बैठा मिला।

उस राक्षस ने मरीउज़ा से कहा — तुम्हारी दोनों बहिनें यहॉ हैं और वे उस कमरे में बन्द हैं। उनके सिर काटे जा चुके हैं। तुम्हारा भी वही हाल होगा अगर तुम सूप में पड़े इस आदमी के पैर को नहीं खाओगी तो।"

मरीउज़ा बोली — "जी जनाब। मैं वही करूँगी जैसा आपने कहा है।"

राक्षस इतना कह कर शिकार पर चला गया और मरीउज़ा ने सोचना शुरू कर दिया कि वह अब क्या करे। तभी उसको एक तरकीब सूझी।

[19] Mariuzza – name of the third and the youngest sister

उसने कॉसे की एक मूसली और ओखली[20] ली और उस पैर को उसमें कूट पीस कर उसका चूरा कर लिया। उस चूरे को उसने एक मोजे में भर कर अपने कपड़ों के नीचे अपने पेट के ऊपर छिपा लिया।

जब वह राक्षस वापस आया तो उसने उस लड़की से पूछा — "क्या तुमने वह पैर खा लिया?"

लड़की ने होठों पर अपनी जीभ फिराते हुए कहा — "ओह मैं बता नहीं सकती कि वह कितना स्वदिष्ट था।"

"अभी पता चल जाता है। ओ पैर, तुम कहॉ हो?"

"मै मरीउज़ा के पेट पर हूँ।"

"वाह। बहुत अच्छे।" राक्षस चिल्लाया। "तुम मेरी पत्नी बनोगी।" और उसने मरीउज़ा से शादी कर ली।

शादी के बाद उसने अपनी सारी चाभियॉ मरीउज़ा को दे दीं, सिवाय एक चाभी के। यह चाभी उस कमरे की थी जिसमें उसके मारे हुए लोग पड़े थे।

शादी की खुशी में जब मरीउज़ा ने राक्षस को शराब पेश की तो वह बोतल पर बोतल खाली करता गया। वह अपने घर की आधी शराब पी गया पर फिर भी और पिये जा रहा था।

[20] Bronze mortar and pestle – see its picture above.

जब मरीउज़ा ने देखा कि वह पी कर बिल्कुल धुत हो गया है तो उसने उससे उस कमरे की चाभी माँगी जिसकी चाभी उसने उसको नहीं दी थी।

"नहीं नहीं वह चाभी नहीं।"

"तुम उस चाभी को मुझे क्यों नहीं देते?"

"क्योंकि उसके अन्दर मरे हुओं की आत्माऐं हैं।"

मरीउज़ा बोली — "अगर वे मर गयी हैं तो वे ज़िन्दा तो नहीं हो सकतीं न।"

राक्षस बोला — "मैं उनको ज़िन्दा कर सकता हूँ।"

मरीउज़ा बोली — "अगर कर सकते हो तो करो।"

राक्षस बोला — "मेरे पास मरहम है।"

मरीउज़ा बोली — "कहाँ रखते हो तुम उसे?"

राक्षस बोला — "आलमारी में।"

मरीउज़ा ने पूछा — "तब तुम तो मर ही नहीं सकते क्योंकि तुम तो वह मरहम लगा करके ज़िन्दा हो जाओगे?"

"मैं? हाँ मैं नहीं मर सकता। पिंजरे में वह फाख्ता है न...।"

"पिंजरे की वह फाख्ता क्या करेगी इसमें?"

"अगर तुम फाख्ता का सिर काट दो तो तुमको उसके दिमाग में एक अंडा मिलेगा। और अगर वह अंडा तुम मेरे माथे के ऊपर तोड़ दो तो बस समझो कि मैं मर गया...।"

यह कह कर उसने अपना सिर मेज के ऊपर रख दिया। मरीउज़ा ने फाख्ता को ढूँढने के लिये सारा घर छान डाला पर वह उसको कहीं मिल ही नहीं रही थी।

आखिर वह उसको मिल ही गयी। तुरन्त ही उसने फाख्ता का सिर काट दिया और उसमें से अंडा निकाल लिया।

फिर उस अंडे को उस सोते हुए राक्षस के माथे पर फोड़ दिया। राक्षस दो चार बार कॉपा और फिर मर गया।

मरीउज़ा ने वह मरहम भी ढूँढ लिया जिससे उसको मरे हुए लोगों को ज़िन्दा करना था। फिर उसने वह कमरा खोला जिसमें मरे हुए लोग पड़े थे और उन मरे हुए लोगों को मरहम लगाने लगी।

पहला आदमी एक राजा था जो जब ज़िन्दा हुआ तो उसको ऐसा लगा जैसे कि वह सोते से उठा हो। वह बोला — "अरे मैं इतना कैसे सो गया? मैं कहॉ हूँ? मुझे किसने जगाया?"

पर मरीउज़ा ने उसकी तरफ कोई ध्यान नहीं दिया और वह दूसरे लोगों को मरहम लगाती रही। पहले उसने अपनी बहिनों को मरहम लगाया, फिर राजाओं को, राजकुमारों को, काउन्टों को और नाइट्स को[21] जिनका तो कोई अन्त ही नहीं था।

अब बहुत सारे राजा और दूसरे कुलीन लोग इन तीनों बहिनों से शादी करना चाहते थे।

[21] Counts and Knights – special status people in European kingdoms

मरीउज़ा बोली — "तुम सबको सबसे पहले यह करना चाहिये कि तुम सब मोरा[22] खेलो और जो भी जीत जाये उसको लड़की चुनने का अधिकार होगा।

सो सबने मोरा खेला और उसमें पहले एक राजा जीत गया। उसने सबसे बड़ी वाली लड़की को चुन लिया। उसके बाद एक राजकुमार जीत गया तो उसने दूसरी लड़की को चुन लिया। अन्त में एक राजा जीता तो उसने मरीउज़ा को ले लिया।

तभी एक आदमी चिल्लाया — "जल्दी करो, जल्दी करो। समय मत बरबाद करो। यहॉ से भाग निकलो। वह राक्षस यहॉ कभी भी वापस आ सकता है और फिर वह हम सबको मार डालेगा।"

मरीउज़ा बोली — "डरो नहीं। मैंने उस राक्षस को खुद मार डाला है। अब तुम सबको उससे डरने की कोई जरूरत नहीं है।"

सब खुशी से उछल पड़े "सो अब हमको डरने की कोई जरूरत नहीं है। यह तो बहुत अच्छा है।"

फिर सबने एक एक घोड़ा लिया, उस राक्षस का खजाना आपस में बॉटा और अपनी अपनी दुलहिनों को ले कर शहर आ गये।

[22] Morrah – a game

उन्होंने अपनी शादी बहुत धूमधाम से मनायी और अब हर एक बहुत खुश था खास करके उन तीनों लड़कियों की मॉ जिसको अब चिकोरी इकट्ठा करने के लिये कहीं नहीं जाना पड़ता था।

4 एक बड़े शरीर वाला आदमी जिसके शरीर में दिल ही नहीं था[23]

यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के नौर्स देशों की लोक कथाओं से ली गयी है। यह एक ऐसे बड़े शरीर वाले आदमी[24] की कहानी है जिसके शरीर में दिल ही नहीं था।

यह कैसी अजीब बात है कि किसी आदमी के शरीर में दिल ही न हो। है न? आओ देखते हैं कि ऐसा कैसे हुआ।

एक बार की बात है कि एक जगह एक राजा था जिसके सात बेटे थे। वह उन सबको इतना ज़्यादा प्यार करता था कि वह उनमें से किसी को भी अपनी ऑखों से दूर नहीं रखना चाहता था।

कम से कम एक को तो वह हमेशा ही अपनी नजरों के सामने देखना चाहता था।

जब सब राजकुमार बड़े हो गये तो वे शादी की इच्छा से घर से बाहर चले गये पर राजा ने अपने सातवें बेटे को अपने पास ही रख लिया। उसने अपने बाहर जाने वाले छहों बेटों से कहा कि वह उसके लिये भी एक दुलहिन ले कर आयें।

---

[23] The Giant Who Had no Heart in His Body – a folktale from Norse Countries, Europe.
Adapted from the Web Site : http://www.sacred-texts.com/neu/ptn/ptn19.htm
Taken from “Popular Tales from the Norse”. By George Webbe Dasent. 1904. It is freely available on the above Web Site.

[24] Translated for the word “Giant”

राजा ने अपने उन छहों बेटों को बहुत सुन्दर और बढ़िया कपड़े दिये। वे कपड़े इतने बढ़िया थे कि उनमें से इतनी चमक निकलती थी कि वह बहुत दूर तक जाती थी। उन सबके पास अपना अपना घोड़ा था जिसकी कीमत हजारों डालर थी। सो इस तरह तैयार हो कर वे अपनी अपनी दुलहिनें ढूँढने चल दिये।

वे बहुत जगह घूमे उन्होंने बहुत सारी राजकुमारियॉ देखीं। फिर वे एक ऐसे राजा के राज्य में आये जिसकी छह बेटियॉ थीं। उसकी वे सब बेटियॉ इतनी प्यारी थी जैसी उन्होंने कभी देखी नहीं थी। उनको देखते ही उनको उनसे प्यार हो गया।

जब उन्होंने उनको शादी के लिये मना लिया तो वे उनको ले कर घर लौटने लगे। पर वे यह भूल गये कि उनको बूट्स[25] यानी अपने सबसे छोटे भाई के लिये भी जो घर पर ही रह गया था एक दुलहिन लानी थी।

ऐसा इसलिये हुआ कि वे सब अपनी अपनी प्रेमिकाओं के प्यार में पूरे खो गये थे तो उनको और किसी का ध्यान ही नहीं आया।

पर जब वे अपने घर की तरफ थोड़ा सा चले तो वे सब एक बहुत ही ढालू पहाड़ी के पास से गुजरे। वह पहाड़ी इतनी ढालू थी कि दीवार जैसी लगती थी। वहीं एक बड़े साइज़ का आदमी रहता था।

[25] Boots was the name of the youngest son of the King.

जब उसने इन छहों राजकुमारों और छहों राजकुमारियों को जाते देखा तो वह अपने घर में से बाहर निकल कर आया। उसने उनकी तरफ देखा और उन सबको पत्थर की मूर्ति बना दिया।

राजा अपने बेटों के आने का इन्तजार करता रहा। जितना वह उनका इन्तजार करता उतनी ही उनको आने में देर लग रही थी। इस इन्तजार से वह बहुत परेशान हो गया। वह नहीं जानता था कि वह अब किस बात से खुश हो।

उसने बूट्स से कहा — "अगर मैंने तुमको यहॉ नहीं रोका होता तो मैं तो अब तक ज़िन्दा ही नहीं बचा होता। तुम्हारे भाइयों के न आने के दुख से मैं बहुत दुखी हूॅ।"

बूट्स बोला — "पर पिता जी अब मैं आपसे यहॉ से जाने की इजाज़त चाहता हूॅ ताकि मैं उनको ढूॅढ सकूॅ। कम से कम मैं तो यही सोच रहा हूॅ।"

उसका पिता बोला — "नहीं बेटे नहीं। तुम यहॉ से नहीं जा सकते। अगर तुम भी बाहर ही रह गये तो।"

पर बूट्स ने तो अपना मन बना रखा था कि उसको तो जाना ही है सो उसने अपने पिता से इतनी ज़्यादा मिन्नतें कीं और इतनी देर तक प्रार्थना की कि उसको उसे जाने की इजाज़त देनी ही पड़ी।

पर अब राजा के पास बूट्स को देने के लिये कोई उतना अच्छा घोड़ा नहीं था जितने अच्छे घोड़े उसने अपने छहों बड़े बेटों को दिये

थे। क्योंकि उसके जितने भी अच्छे घोड़े थे वे सब उसके छहों बेटे और उनके साथी लोग ले गये थे।

अब उसके पास एक बहुत ही बेकार का सा घोड़ा था सो वह उसने उसको दे दिया। पर बूट्स को इसकी रत्ती भर भी चिन्ता नहीं थी कि उसके पिता उसे क्या देते हैं।

वह अपने उसी घोड़े पर कूद कर बैठा और उसी को ले कर चल दिया और पिता से बोला — "पिता जी आप बिल्कुल डरना नहीं मैं वापस जरूर आऊँगा। साथ में मैं अपने छहों भाइयों को भी लाऊँगा।" और यह कहते हुए वह वहाँ से चला गया।

कुछ दूर जाने पर उसको सड़क पर पड़ा हुआ एक रैवन[26] मिला। वह अपने पंख फड़फड़ा रहा था। वह इतना भूखा था कि रास्ते पर से अपने आप उठ भी नहीं पा रहा था।

उसने बूट्स से कहा — "दोस्त मुझे कुछ खाना दो। मैं तुम्हारी तुम्हारी जरूरत के समय सहायता करूँगा।"

राजकुमार बोला — "मेरे पास बहुत ज़्यादा खाना तो नहीं है और मुझे यह भी नहीं मालूम कि तुम मेरी किस तरह सहायता करोगे फिर भी मैं तुमको थोड़ा सा खाना दे सकता हूँ। क्योंकि मुझे लग रहा है कि तुमको उसकी जरूरत है।"

[26] Raven is a crow-like bird – see its picture above.

सो वह जो खाना घर से साथ ले कर आया था उसमें से थोड़ा सा खाना उसको दिया। रैवन को खाना देने के बाद वह आगे चला तो उसको एक छोटी सी नदी में पड़ी एक बड़ी सी सालमन मछली मिली।

वह पानी में से निकल कर जमीन पर आ गयी थी और अब पानी में नहीं जा पा रही थी।

वह राजकुमार से बोली — "ज़रा मुझे पानी में धकेल दो। मैं तुम्हारी तुम्हारी जरूरत के समय जरूर सहायता करूँगी।"

राजकुमार बोला — "मुझे यकीन है कि तुम मेरी जो भी सहायता करोगी वह कोई बहुत बड़ी सहायता तो नहीं होगी पर फिर भी मुझे तुम्हारे ऊपर दया आ रही है कि यहाँ पड़े पड़े तुम्हारा गला रुँध रहा है।"

कह कर राजकुमार ने उसको वहाँ से पानी में धकेल दिया। सालमन को पानी में धकेलने के बाद वह फिर अपने रास्ते चल दिया। वह काफी देर तक चलता रहा।

काफी आगे जाने पर उसको एक भेड़िया मिला जो इतना ज़्यादा भूखा था कि वह सड़क के किनारे किनारे अपने पेट के बल भी बड़ी मुश्किल से रेंग पा रहा था।

भेड़िया राजकुमार से बोला — "दोस्त ज़रा मुझे अपना घोड़ा खाने के लिये दे दो। मैं इतना भूखा हूँ कि मेरी पसलियों में से हवा सीटी बजा रही है। मैंने दो साल से खाना नहीं खाया है।"

बूट्स बोला — "नहीं ऐसे काम नहीं चलने का। पहले तो मुझे रैवन मिला, मुझे उसको खाना खिलाना पड़ा। फिर सालमन मछली मिली मुझे उसको पानी में डालना पड़ा। और अब मुझे तुम मिले जो मेरा घोड़ा माँग रहे हो। नहीं नहीं यह नहीं हो सकता। अगर मैं यह तुमको दे दूँगा तो फिर मैं किस पर चढ़ूँगा।"

ग्रेलैग्ज़ भेड़िया[27] बोला — "ऐसा नहीं है दोस्त। पर फिर भी तुम मेरी सहायता कर सकते हो। तुम मेरी पीठ पर चढ़ सकते हो और मैं तुम्हारी जरूरत के समय तुम्हारी सहायता करूँगा।"

राजकुमार बोला — "मुझे तुमसे जो सहायता मिलेगी वह कोई बहुत ज़्यादा तो नहीं होगी। पर फिर भी क्योंकि तुम इस समय बहुत भूखे हो तो तुम मेरा घोड़ा ले सकते हो।"

सो बूट्स ने उसको अपना घोड़ा दे दिया। भेड़िये ने वह घोड़ा खा लिया। घोड़ा खा कर भेड़िया अब ताकतवर हो गया था। राजकुमार ने उसके मुँह में घोड़े का साज लगा दिया, उसके ऊपर घोड़े की जीन कस दी और उसके ऊपर बैठ कर चल दिया।

वह भेड़िया भी अब राजकुमार को खूब तेज़ी से ले कर भागा जा रहा था। बल्कि वह भेड़िया राजकुमार को इतना तेज़ ले जा रहा था जितना तेज़ राजकुमार पहले कभी किसी घोड़े पर भी नहीं चला था।

[27] Greylegs Wolf – name of the wolf the Prince met on his way

ग्रेलैग्ज़ बोला — "कुछ दूर चलने के बाद मैं तुमको उस बड़े साइज़ के आदमी का घर दिखाऊँगा।" कुछ दूर और चलने के बाद वे बड़े साइज़ के आदमी के घर आ गये।

भेड़िया बोला — "देखो यह है बड़े साइज़ के आदमी का घर। और देखो ये हैं तुम्हारे छहों भाई जिनको इस बड़े साइज़ के आदमी ने पत्थर की मूर्ति बना दिया है। और ये हैं वे छह लड़कियॉ जिनको वे अपनी पत्नियॉ बनाने के लिये ला रहे थे।

वह देखो वह दरवाजा है। तुम इसी दरवाजे से उसके घर के अन्दर चले जाओ।"

राजकुमार बोला — "मेरी तो इसके अन्दर जाने की हिम्मत नहीं होती। वह मुझे मार डालेगा।"

भेड़िया बोला — "नहीं नहीं ऐसा नहीं होगा। जब तुम अन्दर जाओगे तो वहॉ तुमको एक राजकुमारी मिलेगी। वह तुमको बतायेगी कि तुमको उस बड़े साइज़ के आदमी को कैसे मारना है। तुम उसी का कहा मानना और जैसा वह कहे वैसा ही करना।"

यह सुन कर बूट्स अन्दर चला तो गया पर सच कहा जाये तो वह बहुत डरा हुआ था। जब वह उस घर के अन्दर पहुँचा तो बड़े साइज़ का आदमी घर में नहीं था। वह बाहर गया हुआ था।

पर जैसा कि भेड़िये ने कहा था एक कमरे में एक राजकुमारी बैठी हुई थी। वह राजकुमारी इतनी प्यारी थी कि बूट्स कि निगाहें

ही उस पर ठहर ही नहीं पा रही थीं। उसने इतनी सुन्दर लड़की पहले कभी नहीं देखी थी।

जैसे ही उसने बूट्स को देखा तो वह बोली — "अरे भगवान तुम्हारा भला करे तुम यहाँ कब और कैसे आ गये। अब तुम ज़िन्दा नहीं बच सकते।

कोई उस बड़े साइज़ के आदमी को नहीं मार सकता जो यहाँ रहता है क्योंकि उसके शरीर में तो दिल ही नहीं है।"

बूट्स बोला — "खैर अब तो मैं यहाँ आ ही गया हूँ। कम से कम अब मैं कोशिश तो कर ही सकता हूँ कि मैं उसके साथ क्या करूँ। शायद मैं अपने भाइयों को आजाद करा सकूँ जो पत्थर की मूर्ति बने इस दरवाजे के बाहर खड़े हैं। और साथ में तुमको भी।"

राजकुमारी बोली — "अगर तुमने यह सोच ही रखा है तो तुम उन सबको जरूर ही आजाद करा लोगे। चलो देखते हैं कि हम कोई ऐसा प्लान बनायें जो काम कर जाये।

देखो तुम उस पलंग के नीचे छिप जाओ और जब वह बड़े साइज़ का आदमी यहाँ आये तो तुम मेरी और उसकी बातें ध्यान से सुनना कि हम क्या बात करते हैं। पर ध्यान रहे कि उस समय तुम चूहे की तरह बिल्कुल चुपचाप पड़े रहना कोई आवाज नहीं करना।"

सो वह पलंग के नीचे छिप गया। वह उस बड़े साइज़ के आदमी से बहुत डरा हुआ था। कुछ देर बाद वह बड़े साइज़ का

आदमी वहॉ आया और चिल्ला कर बोला — "हा हा हा हा। अरे वाह यहॉ इस घर में तो ईसाई खून की बू आ रही है।"

राजकुमारी बोली — "हॉ मुझे मालूम है कि वह यहॉ है। क्योंकि अभी एक मैना[28] एक आदमी की हड्डी ले कर यहॉ उड़ आयी थी और उसने उसे चिमनी से नीचे गिरा दिया।

मैने उसको जल्दी से बाहर फेंकने की कोशिश की तो मैंने उसको बाहर तो फेंक दिया पर उसकी बू नहीं निकाल सकी।"

यह सुन कर वह बड़े साइज़ का आदमी चुप हो गया। फिर रात हो गयी और वे दोनों सोने चले गये। कुछ देर को बाद ही राजकुमारी बोली — "मैं हिम्मत करके तुमसे एक बात पूछना चाहती हूँ अगर तुम नाराज न हो तो।"

बड़े साइज़ का आदमी बोला — "हॉ हॉ पूछो। वह क्या।"

राजकुमारी बोली — "यही कि तुम अपना दिल कहॉ रखते हो क्योंकि तुम उसको अपने साथ तो रखते नहीं। क्या तुम उसको कहीं दूसरी जगह रखते हो?"

बड़े साइज़ का आदमी बोला — "पहली बात तो इस बात को जानने से तुम्हारा कोई मतलब नहीं है। पर अगर तुम जानना ही

[28] Translated for the word "Magpie" – see its picture above.

चाहती हो तो वह दरवाजे की देहरी के नीचे है। मैं उसको वहीं रखता हूँ।"

यह सुन कर राजकुमार बहुत खुश हुआ। उसने सोचा "अब हम देखते हैं कि वह हमको कैसे नहीं मिलता।"

अगली सुबह वह बड़े साइज़ का आदमी कुछ ज़रा ज़्यादा ही जल्दी उठ गया और जंगल चला गया। जैसे ही वह घर से बाहर निकला बूट्स और राजकुमारी अपने काम पर लग गये। वे दरवाजे की देहरी के नीचे उसका दिल ढूँढने में लगे थे।

पर जितना वे उस जगह को खोदते जाते थे और जितना वे उसके दिल को वहाँ ढूँढते जाते थे उतना ही वह उनको नहीं मिल रहा था।

राजकुमारी बोली — "लगता है इस बार उसने हमको धोखा दिया है। पर हम एक बार और कोशिश करेंगे।"

कह कर उसने बागीचे से सबसे सुन्दर फूल इकट्ठा किये और दरवाजे पर पत्थर दोबारा रख कर अपनी खुदायी को ढकने के लिये दरवाजे की देहरी पर फैला दिये।

जब उस बड़े साइज़ के आदमी के आने का समय हुआ तो बूट्स फिर से पलंग के नीचे छिप गया। जैसे ही वह पलंग के नीचे छिपा वह बड़े साइज़ का आदमी वहाँ आ गया।

उसने आते ही फिर कुछ सूँघने की कोशिश की और बोला — "ओह मुझे तो यहाँ फिर से ईसाई खून की बू आ रही है।"

राजकुमारी बोली — "हॉ यहॉ है तो। क्योंकि एक मैना एक आदमी की हड्डी अपनी चोंच में दबा कर यहॉ आयी थी और उसे चिमनी में से नीचे फेंक गयी। मैंने उसे जल्दी से जल्दी फेंकने की कोशिश की और उसे फेंक भी दिया पर फिर भी उसकी बू यहॉ रह गयी।"

यह सुन कर बड़े साइज़ वाला आदमी फिर चुप हो गया और फिर कुछ नहीं बोला। पर फिर कुछ देर उसने पूछा — "दरवाजे पर ये फूल किसने बिखेरे हैं?"

राजकुमारी बोली — "मैंने।"

"पर तुम्हारे इन फूलों को यहॉ बिखेरने का मतलब क्या है?"

"ओह मुझे तुम इतने अच्छे लगते हो कि बस मैं तुम्हारे लिये ये फूल बिखेरे बिना नहीं रह सकी।"

"तुम्हें यह कहने की जरूरत नहीं है क्योंकि नहीं तो ये वहॉ कैसे पड़े होते।"

फिर रात हुई और फिर वे दोनों सोने चले गये तो राजकुमारी ने उस बड़े साइज़ के आदमी से फिर पूछा कि उसका दिल कहॉ था। उसने उससे कहा कि वह यह जानना चाहती थी कि आखिर उसका दिल था कहॉ।

बड़े साइज़ के आदमी ने जवाब दिया — "अगर तुम जानना ही चाहती हो तो वह दीवार के सहारे जो आलमारी रखी है वह उसमें रखा है।"

यह सुन कर बूट्स और राजकुमारी दोनों ने सोचा कि अब हम कल उसे ढूँढने की कोशिश करेंगे। अगले दिन भी बड़े साइज़ का आदमी सुबह सवेरे जल्दी उठा और जंगल चला गया।

उसके जाते ही बूट्स और राजकुमारी ने उसके दिल को उस आलमारी में ढूँढने की कोशिश की पर जितना ज़्यादा वे उसे वहाँ ढूँढते थे वह उनको उतना ही ज़्यादा नहीं मिलता था।

राजकुमारी ने कहा "इस बार वह हमको फिर धोखा दे गया पर हम अभी हार नहीं मानेंगे और हम एक बार फिर कोशिश करेंगे।" कह कर उसने उस आलमारी को भी फूलों और फूलों के हारों से ढक दिया।

फिर जब उस बड़े साइज़ के आदमी के आने का समय हुआ तो बूट्स एक बार फिर से पलंग के नीचे छिप गया। तभी वह बड़े साइज़ का आदमी भी वहाँ आ गया।

आते ही वह फिर बोला — "ओह मुझे तो यहाँ फिर से ईसाई खून की बू आ रही है।"

राजकुमारी बोली — "हाँ यहाँ है तो। क्योंकि एक मैना एक आदमी की हड्डी अपनी चोंच में दबा कर यहाँ आयी थी और उसे चिमनी में से नीचे फेंक गयी। मैंने उसे जल्दी से जल्दी फेंकने की कोशिश की और उसे फेंक भी दिया पर फिर भी उसकी बू यहाँ रह गयी।"

यह सुन कर बड़े साइज़ वाला आदमी फिर चुप हो गया और फिर कुछ नहीं बोला। पर फिर कुछ देर में उसने आलमारी को फूलों से सजा हुआ देखा तो उससे पूछा — "आलमारी को फूलों से किसने सजाया है?"

राजकुमारी बोली — "और कौन सजा सकता है सिवाय इस राजकुमारी के।"

"और इस सबका मतलब क्या है?"

"मतलब कोई खास नहीं। बस मुझे तुम इतने अच्छे लाते हो कि जब मुझे यह पता चला कि तुम्हारा दिल यहाँ रखा हुआ है तो मैं इसको फूलों से सजाये बिना न रह सकी।"

बड़े साइज़ के आदमी ने हँस कर पूछा — "तुम इतनी बेवकूफ कैसे हो सकती हो कि तुम ऐसी बातों पर यकीन कर लेती हो?"

राजकुमारी बोली — "जब तुम खुद यह सब कहते हो तो मुझे यकीन करना ही पड़ता है।"

"तुम बहुत भोली हो। मेरा दिल कहाँ है यह तुम कभी नहीं जान पाओगी।"

राजकुमारी बोली — "पर मुझे बहुत अच्छा लगेगा अगर मुझे यह पता चल जाये कि वह कहाँ रखा है।"

अब वह बड़े साइज़ का आदमी अपने आपको और नहीं रोक सका। उसको कहना ही पड़ा — "यहाँ से बहुत दूर एक झील है। उसमें एक टापू है। उस टापू पर एक चर्च है। उस चर्च में एक

कुँआ है। उसके पानी में एक बतख तैरती है। उस बतख में एक अंडा है और उस अंडे में मेरा दिल है मेरी जान।"

अगले दिन फिर वह बड़े साइज़ का आदमी सुबह सवेरे जल्दी उठा और जंगल चला गया। जैसे ही वह जंगल गया तो बूट्स बोला "अब मुझे भी चलना चाहिये। काश मैं उस जगह का रास्ता जानता।"

उसने राजकुमारी से विदा ली और उसके घर से बाहर निकला तो बाहर ही उसको उसका इन्तजार करता भेड़िया मिल गया। बूट्स ने उसे बताया कि अन्दर क्या हुआ था और उससे कहा कि वह उस चर्च में जो कुँआ है वहाँ जाना चाहता था। पर उसे तो रास्ता ही नहीं मालूम था।

भेड़िया बोला — "तुम चिन्ता न करो। तुम बस मेरी पीठ पर बैठ जाओ। तुमको वहाँ का रास्ता जल्दी ही मिल जायेगा।"

राजकुमार तुरन्त ही उसकी पीठ पर बैठ गया और भेड़िया उसको ले कर वहाँ से तेज़ी से भाग लिया। इस तेज़ी से भागने की वजह से उसके पीछे हवा की सीटी सी बजने लगी।

वह हैजेज़[29] के ऊपर से हो कर भाग रहा था वह खेतों से हो कर भाग रहा था।

[29] Hedge is normally a low wall, 3-6 feet tall, otherwise it can be high also – as high as 10-12 feet, made of very densely planted plants. It works as a boundary wall to protect the house from thieves and animals etc – see its picture above.

वह पहाड़ियों के ऊपर से हो कर भाग रहा था वह घाटियों में से हो कर भाग रहा था।

कई दिनों तक चलने के बाद वे दोनों एक झील के पास आ पहुँचे। उन्होंने देखा कि उस झील में एक टापू भी था। पर राजकुमार को पता नहीं कि वह उस झील को कैसे पार करे और कैसे उस टापू पर पहुँचे।

भेड़िया बोला कि उसको डरने की कोई जरूरत नहीं बस वह उससे चिपका बैठा रहे। यह कह कर वह राजकुमार को अपनी पीठ पर बिठाये हुए उस झील में कूद पड़ा और उसके बीच में बने टापू तक तैर गया।

अब राजकुमार चर्च तक आ पहुँचा था पर चर्च की चाभियाँ चर्च की मीनार पर बहुत ऊँची टँगी हुई थीं। अब राजकुमार चर्च की चाभियाँ कैसे ले।

भेड़िया बोला — "अब तुम रैवन को पुकारो वह तुम्हारी सहायता करेगा।"

सो राजकुमार ने रैवन को पुकारा और पल भर में ही रैवन वहाँ हाजिर था। वह ऊपर उड़ा और तुरन्त ही चर्च की चाभी ले कर नीचे आ गया।

चर्च का दरवाजा खोल कर राजकुमार चर्च में घुसा और कुँए के पास आया तो वहाँ कुँए में तैरती एक बतख देखी। वह कभी आगे और कभी पीछे तैर रही थी।

राजकुमार ने उसको बुलाना शुरू किया तो वह उसके पास आ गयी। जैसे ही वह उसके पास आयी उसने बतख को पकड़ लिया। और जैसे ही उसने बतख को पकड़ा तो बतख के पेट में से उसका अंडा निकल कर कुँए में जा गिरा।

अब बूट्स की समझ में यही नहीं आ रहा था कि वह वह अंडा उस कुँए में से कैसे निकाले। तब भेड़िये ने उसको सलाह दी कि अब वह सालमन मछली को पुकारे वही उसकी सहायता कर सकती थी।

सो राजकुमार ने सालमन मछली को पुकारा। सालमन मछली भी वहाँ तुरन्त ही हाजिर हो गयी और कुँए की तली में पड़े अंडे को बाहर निकाल लायी।

अब भेड़िया बोला — "अब तुम इसको अपने हाथ में दबाओ।" जैसे ही राजकुमार ने उस अंडे को अपने हाथ में दबाया तो बड़े साइज़ का आदमी चीखा।

भेड़िया फिर बोला — "इसे एक बार फिर से दबाओ।" राजकुमार ने उसे फिर से दबाया तो वह बड़े साइज़ का आदमी फिर से ज़ोर से चीखा।

उसने राजकुमार से अपने आपको छोड़ देने की प्रार्थना की और कहा कि वह वही करेगा जो राजकुमार कहेगा बस वह उसकी ज़िन्दगी बख्श दे।

भेड़िया फिर बोला — "उससे कहो कि वह तुम्हारे भाइयों और उनकी होने वाली दुलहिनों को ज़िन्दा कर दे जिनको उसने पत्थर की मूर्ति में बदल दिया है तभी तुम उसकी ज़िन्दगी बख्शोगे।"

वह बड़े साइज़ का आदमी राजी हो गया और उसने तुरन्त ही उसके छहों भाइयों और उनकी होने वाली पत्नियों को ज़िन्दा कर दिया।

अब भेड़िया बाला — "बस अब इस अंडे को एक बार और दबाओ और इस बार इसको दो हिस्सों में तोड़ दो।"

सो बूट्स ने उसको अपने हाथ में ले कर तुरन्त ही तोड़ दिया। उस अंडे के टूटते ही राक्षस भी मर गया। राक्षस के मरते ही भेड़िया बूट्स को राक्षस के घर ले गया। वहाँ उसके छहों भाई और उनकी होने वाली पत्नियाँ ज़िन्दा और खुश खुश खड़ी थीं।

उसके बाद बूट्स उस पहाड़ी वाले घर में गया जहाँ उसकी अपनी राजकुमारी थी। उसने उसको अपने साथ लिया और फिर सातों भाई अपनी अपनी होने वाली पत्नियों को साथ ले कर अपने पिता के राज्य चले।

बस अब तुम केवल सोच ही सकते हो कि वह राजा अपने सब बेटों और उनकी होने वाली पत्नियों को देख कर कितना खुश हुआ होगा।

राजा बोला — "पर सबसे सुन्दर और सबसे प्यारी तो बूट्स की पत्नी है और अबसे वही अपनी पत्नी के साथ मेज पर सबसे ऊँची जगह बैठेगा।"

तब उसने अपने सब बेटों की शादी की एक बहुत बड़ी दावत दी जो कई दिनों तक चली। उनकी शादी की खुशियाँ भी बहुत दिनों तक धूमधाम से मनायी गयीं।

5 एक गरीब के बेटे जीरिया की कहानी[30]

एक बार की बात है कि जियोर्जिया में एक बहुत ही गरीब आदमी रहता था। उसकी शादी हो गयी थी और उसके एक ही बेटा था। उसका यह बेटा बहुत ही सुन्दर और बहुत ही ताकतवर था। इसका नाम था जीरिया[31]।

एक दिन जीरिया शिकार करने गया तो जब वह शिकार करके शाम को घर लौट रहा था तो उसको एक स्त्री मिली जिसके हाथ में एक घड़ा था जिसे ले कर वह पानी भरने के लिये झरने पर ले कर जा रही थी। उसने एक तीर चलाया और उस स्त्री का घड़ा तोड़ दिया।

उस स्त्री ने कहा — "अगर तुम ऐसे ही लड़ने वाले हो तो बजाय मेरा बरतन तोड़ने के बारह डैमियों[32] की अकेली बहिन को ले कर आओ जो बारह पहाड़ों के उस पार रहती है।"

---

[30] The Story of Geria, the Poor Man's Son (Tale No 3 – Mingrelian Tales) – a folktale from Georgia, Europe.
Adapted from the Web Site :
http://www.archive.org/stream/cu31924029936006#page/n19/mode/2up

[31] Geria means little wolf. In Mingrelia there are are many such names, such as Joghoria, little dog, Lomikia, little lion etc.

[32] Demi, dii, ndii in Mingrelian or Devi or Mdevi in Georgian, connected with Persian Div, a representative of the principle of evil, but with certain limitations, neither incorporeal nor immortal, but half demon half man, ie an unclean spirit in the form of a giant. He is subject to death, even a man can kill, cheat terrify him; he can marry a woman.

यह सुन कर उस नौजवान का दिल तो उस लड़की को देखने की इच्छा से ही बहुत ज़ोर से धड़कने लगा। घर पहुँच कर उसने अपने माता पिता से कहा कि वे उसके लिये कम से कम एक साल के लिये खाना तैयार कर दें क्योंकि वह बाहर सफर पर जाना चाहता था।

और अगर वह इस बीच घर न आ पाये तो वे उसको ढूँढने के लिये निकल पड़ें।

उसके माता पिता ने उसको इस बात की इजाज़त नहीं दी कि वह इस तरह से बाहर जाये सो वे बोले — "हमारे तो तेरे सिवाय और कोई बच्चा नहीं है। क्या तू भी हमारे पास से चला जायेगा और मर जायेगा?" और दोनों ने एक सुर में रोना शुरू कर दिया।

पर जीरिया ने उनकी एक न सुनी। सो उन्होंने उसके लिये खाने का सामान जुटाया और रोते हुए उसको विदा किया। वे लोग सब इतनी ज़ोर से रोये कि उनका रोना सारे देश में सुना गया। और सारे देश ने ही नहीं बल्कि सूरज और चाँद ने भी सुना जमीन और आसमान ने भी सुना समुद्र और रेत ने भी सुना।

आखिर उन्होंने अपने बेटे को आशीर्वाद दिया और जाने की इजाज़त दी। उसने अपने साथ अपना छोटा कुत्ता लिया जिसका नाम था "मैथीकोची"[33]। जब उन्होंने एक दूसरे से विदा ली तो वे

[33] "Mathicochi" means "I am also a human being"

आपस में गले मिले एक दूसरे को चूमा और वह नौजवान अपने रास्ते पर चल दिया।

वह चलता गया चलता गया चलता गया जितनी दूर तक वह चल सकता था, हफ्ता हफ्ता हफ्ता पखवाड़ा एक साल और तीन महीना।[34] वह छह पहाड़ों पर से गुजर चुका था।

जब उसने छह पहाड़ पार कर लिये तो उसके चारों तरफ की चीज़ें गोल गोल घूमने लगीं। पेड़ और पत्थर गिर कर नीचे घाटियों में इकट्ठा होने लगे पर जीरिया को कोई नुकसान नहीं पहुँचा।

तब नीचे से एक आवाज आयी — "यह तुम किस तरह के आदमी हो जो इस तरह से मेरे खिलाफ खड़े हुए हो। गरीब के बेटे जीरिया के अलावा मेरा मुकाबला और कौन कर सकता है।"

यह सुन कर जीरिया बोला — "यह मैं जीरिया ही हूँ।"

जब उसने यह सुना तो रोकापी[35] उससे मिलने के लिये निकल कर बाहर आयी। उसके सामने झुकी और उसको बहुत इज़्ज़त दे कर उससे पूछा — "तुम किधर जाते हो।"

तो नौजवान ने उसको सब कुछ बता दिया। सुन कर रोकापी बहुत दुखी हुई।

जीरिया ने उससे पूछा "तुम दुखी क्यों होती हो?"

---

[34] Three years, three months, and the three weeks are the usual measures of the time in Mingrelians tales.

[35] Rokapi in Georgian folktales is an old woman of demoniacal character possessing enchanted castles and domains. Sometimes the word simply means witch and in ordinary conversation it is applied to an ugly ill-natured toothless old hag.

"क्योंकि मैंने उधर की तरफ जाते तो बहुत देखे हैं पर मैंने उधर से आते हुए कोई नहीं देखा।"

पर जीरिया ने उसके ऊपर कोई ध्यान नहीं दिया और अपने रास्ते चला गया। वह चलता गया चलता गया चलता गया अपनी ताकत से भी ज़्यादा चलता गया। और जब उसने दूसरे छह पहाड़ पार कर लिये तो पहले से भी बड़ा भूचाल आया।

यह जगह तो रोकापी की सबसे बड़ी बहिन की निकली पर जीरिया को फिर भी कोई डर नहीं लगा। रोकापी की बड़ी बहिन चिल्लायी — "तुम कैसे आदमी हो जिसने मेरी जादूगरी को भी रोक रखा है। क्या तुम गरीब के बेटे जीरिया हो?"

जीरिया चिल्लाया — "हॉ मैं जीरिया ही हूँ।"

यह रोकापी भी तुरन्त ही उससे मिलने के लिये बाहर निकल कर आयी उसके सामने इज़्ज़त से झुकी और उससे पूछा — "तुम किधर जा रहे हो?"

जीरिया ने उसे अपना प्लान बताया तो वह भी बहुत दुखी हो गयी। जीरिया ने उससे पूछा कि वह दुखी क्यों हो गयी थी तो उसने भी वही जवाब दिया — "क्योंकि मैंने उधर की तरफ जाते तो बहुत देखे हैं पर मैंने उधर से आते हुए कोई नहीं देखा। फिर भी मैं तुम्हारी एक सेवा कर सकती हूँ। मैं तुम्हें अपना तीन टॉगों वाला घोड़ा दे सकती हूँ।"

इतना कह कर उसने अपने घोड़े को बुलाया और उससे कहा — "जब तक जीरिया ज़िन्दा रहता है तब तक उसकी सेवा किये जाओ।"

जीरिया ने रोकापी से उसका घोड़ा लिया उसको विदा कहा घोड़े पर चढ़ा और अपने छोटे कुत्ते मैथीकोची को साथ ले कर वहॉ से चल दिया।

वह घोड़े पर सवार हो कर एक घास के मैदान में आया जहॉ डैमियों का घर था। जब उसने वहॉ पानी की तरफ देखा तो वह बहुत खुश हुआ और उसकी ऑखों में ऑसू आ गये। उसने अपने घर के बारे में सोचा और वहॉ के मैदानों के बारे में। उसके मुॅह से भगवान के लिये धन्यवाद निकल गया।

उसने फिर इतनी तेज़ी से अपना घोड़ा आगे बढ़ाया कि उसके पीछे धूल का बादल उड़ने लगा। नौजवान ने सोचा "लो अब तो में एक अनजानी जगह में आ गया।" वह डैमियों[36] के फाटक तक गया वहॉ जा कर अपने घोड़े से नीचे उतरा और घोड़े को पास में ही बॉध दिया।

वह थोड़ी दूर ही चला था कि चिल्लाया "मुझे लगता है कि मैंने अपना घोड़ा ठीक से नहीं बॉधा है।"

[36] Demi, dii, ndii in Mingrelian or Devi or Mdevi in Georgian, connected with Persian Div, a representative of the principle of evil, but with certain limitations, neither incorporeal nor immortal, but half demon half man, ie an unclean spirit in the form of a giant. He is subject to death, even a man can kill, cheat terrify him; he can marry a woman.

कह कर वह घोड़े के पास वापस आया एक ओक के पेड़ को जड़ से उखाड़ा उसकी शाखाओं को जमीन में गाड़ा और फिर कस कर उससे अपना घोड़ा बॉध दिया।

यह देख कर घोड़ा बोला — "अगर तुमने ऐसा न किया होता तो मैं वापस घर भाग गया होता। पर अब तुम वैसा ही करो जैसा मैं तुमसे करने के लिये कहता हूँ। फिर सब कुछ ठीक हो जायेगा।

डैमी लोग अभी अन्दर हैं। तुम घास के मैदान में जाओ। वहॉ तुमको एक केटली मिलेगी। उसको तुम तीन बार पलट कर उलटा कर देना और फिर उसे वैसा ही छोड़ देना। फिर तुम उस लड़की के पास जाना और उससे कहना कि वह तुम्हारे प्रति वफादारी की कसम खाये।"

जीरिया घास के मैदान में गया तो उसको वह केटली मिल गयी जो घोड़े ने उसे बतायी थी। उसने उसको तीन बार पलटा और पलटा हुआ ही छोड़ दिया। फिर वह लड़की के पास गया। सारे ताले तोड़े और उस कमरे में आया जिसमें वह थी।

जीरिया को देख कर तो वह लड़की आश्चर्य में पड़ गयी पर जीरिया की बहादुरी ने उसको खुश कर दिया। थोड़े में कहें तो उसने उससे शादी का वायदा भी कर लिया।

जीरिया खुशी खुशी वहॉ गया जहॉ उसने अपना घोड़ा बॉधा था। वहॉ जा कर उसने रात बितायी। अगली सुबह घोड़ा बोला — "डैमी लोग अब घास के मैदान से चले गये हैं। जब उन्होंने केटली

को उलटा पड़ा देखा तो उन्होंने उसकी बड़ी तारीफ की क्योंकि साधारणतया उस केटली को बारह डैमी उलटा कर सकते हैं।

सो उन्होंने एक दूसरे से कहा जिसने भी इस केटली को उलटा किया है हमें उसका कहना मानना चाहिये। इसलिये अब तुम्हारे वहाँ जाने का समय आ गया है।" सो जीरिया घास के मैदान की तरफ चल दिया।

जैसे ही डैमियों ने उसे देखा वे जल्दी से उठ कर खड़े हो गये और उससे मिलने आये। उन्होंने उसके सामने सिर झुकाया और बोले — "तुमको हमसे क्या चाहिये।"

जीरिया बोला — "मुझे तुम्हारी बहिन से शादी करनी है।"

डैमी बोले — "हम तुम्हें अपनी बहिन दे तो दें पर "काला राजा" तुमको उसे लेने नहीं देगा।"

जीरिया बोला — "मैं किसी की चिन्ता नहीं करता।"

सो शादी की दावत का इन्तजाम किया गया। जब दावत चल ही रही थी तो सुबह को जीरिया ने बाहर की तरफ देखा तो देखा कि काले राजा के भेजे हुए बहुत सारे लोग वहाँ जमा हैं। जीरिया तुरन्त ही अपने घोड़े पर चढ़ा और उन लोगों में घुस गया और उन सबको हरा दिया।

उसने केवल तीन को ज़िन्दा छोड़ा। उनको उसने काले राजा के पास दूत की तरह से यह सन्देश ले कर भेज दिया कि वे जा कर उससे कह दें "यह मैंने गरीब के बेटे जीरिया ने किया है।"

यह सुन कर तो काला राजा बहुत गुस्सा हुआ। अबकी बार उसने अपनी करीब करीब सारी सेना जीरिया से लड़ने के लिये भेज दी।

जब जीरिया ने इतने सारे लोग देखे तो एक बार तो वह सोच में पड़ गया पर घोड़े ने उससे कहा — "नौजवान यह तो कुछ भी नहीं तुम इससे भी बुरे हालात को देखो।"

जीरिया ने घोड़े को एक कोड़ा मारा और काले राजा की सेना पर हमला बोल दिया। उसने एक आदमी को छोड़ कर उन सबको मार गिराया। उसको उसने यह सन्देश ले कर काले राजा के पास भेज दिया कि उसकी सारी सेना नष्ट हो गयी।

यह सन्देश सुन कर तो राजा का पारा सातवें आसमान पर चढ़ गया और उसने खुद जीरिया से लड़ने की सोची। उसने अपने वफादार गुलाम क्वामुरिट्ज़ खामी[37] को बुलाया जिसको वह अपनी कठिनाइयों में बुलाया करता था।

उसने उसको अपनी बची खुची सेना ले कर जीरिया का सामना करने के लिये भेज दिया।

उनको आते देख कर जीरिया उठा और उन पर एक नजर डाली तो वह यह देख कर बहुत खुश हुआ कि क्वामुरिट्ज़ खामी उनमें नहीं था। अब वह वहॉ नहीं था तो वह क्या कर सकता था।

[37] Quamuritz Khami – name of the slave of Black King. He had a star in his brow.

घोड़े ने उससे कहा — "वह उधर है जिसके बारे में मैंने तुमसे कहा था।"

जीरिया ने भगवान को धन्यवाद दिया अपनी पत्नी से विदा ली और यह सोच कर चल दिया कि वह मर जायेगा।

पहले तो उसने सेना को मारा फिर उसने क्वामुरिट्ज़ खामी से लड़ना शुरू किया। वे दोनों गदा ले कर लड़े पर यह लड़ाई किसी ताकतवर आदमी से नहीं थी क्योंकि क्वामुरिट्ज़ खामी की आत्मा तो किसी दूसरे के हाथों में सुरक्षित थी। तो वह कैसे मर सकता था।

क्वामुरिट्ज़ खामी चिल्लाया — "तुमको ऐसे मारना चाहिये।" और यह कह कर उसको मार दिया।

जब जीरिया मर गया तो क्वामुरिट्ज़ खामी ने सारे डैमियों को मार दिया, जीरिया की पत्नी को लिया उसको उसके पति के घोड़े पर चढ़ाया और अपने मालिक के पास ले चला।

वहॉ जा कर जीरिया की पत्नी ने कहा — "मैं तो एक ऐसे आदमी की विधवा हूँ कि मैं तुम जैसे आदमी की तो हो ही नहीं सकती। या तो तुम मुझसे लड़ो और फिर जीतने वाला जो चाहे सो करे, नहीं तो मुझे तीन महीने तक शोक के काले कपड़े पहनने की इजाज़त दी जाये।"

काला राजा उससे लड़ने से डरता था क्योंकि वह डैमी जाति की थी इसलिये उसने उसको तीन महीने का शोक मनाने की इजाज़त दे दी।

जब जीरिया मरा था तब उसका सिर एक तरफ को लुढ़क गया था और शरीर दूसरी तरफ लुढ़क गया था। उसका वफादार कुत्ता मैथीकोची वहॉ गया और उसने उसके शरीर के दोनों हिस्से जोड़ दिये और उनकी रखवाली करने लगा।

जब यह सब हो रहा था तो इसको होते होते एक साल बीत गया। जब जीरिया के माता पिता ने देखा कि एक साल बीत गया और जीरिया वापस लौट कर नहीं आया तो वे उसको ढूँढने निकले।

चलते चलते वे एक बहुत ही कम चौड़ी सड़क पर आये तो क्या देखते हैं कि वहॉ बहुत सारे सॉप लड़ रहे थे और अब सब मर गये हैं। केवल दो बड़े सॉप बच कर नदी के अन्दर चले गये हैं।

नदी के अन्दर गये हुए सॉप फिर नदी से बाहर आ गये हैं और उन्होंने मरे हुए सॉपों के ऊपर अलग अलग दिशाओं में घूम कर उनके ऊपर पानी डालना शुरू कर दिया है। उन्होंने देखा कि वे मरे हुए सॉप फिर से ज़िन्दा हो गये हैं।

जीरिया के माता पिता को यह देख कर बड़ा ताज्जुब हुआ। उन्होंने सोचा कि "यह तो मरे हुए को जिलाने वाला पानी लगता है हमको भी यह पानी थोड़ा सा ले लेना चाहिये।" सो उन्होंने भी नदी में से थोड़ा सा पानी ले लिया।

जब वे अपने बेटे की जगह पहुँचे तो जीरिया के कुत्ते ने उनको देखा तो वह दुखी सा उनके पास दौड़ा आया और उनको ले कर

जीरिया के मरे हुए शरीर के पास आया। जब उन्होंने जीरिया का मरा हुआ शरीर देखा ते वे दोनों दुखी हो कर जमीन पर गिर पड़े।

तब उनको याद आया कि उस बदकिस्मत की मॉ के पास तो मुर्दे को जिलाने वाला पानी है।

सो मॉ ने तुरन्त ही अपने बेटे के ऊपर वह जिला देने वाला पानी छिड़क दिया और लो जीरिया तो ज़िन्दा हो गया। ज़िन्दा होते ही जीरिया बोला — "अरे में तो कितनी देर सोता रहा।"

और जब उसने अपने माता पिता को वहॉ देखा तो वह तो बहुत खुश हो गया पर यह याद करके कि उसके ऊपर क्या बीती थी वह फिर दुखी हो गया। उसने एक बार फिर से अपने माता पिता को विदा कहा और वहॉ से चल दिया।

उसके माता पिता यह सुन कर बहुत रोये पर भगवान में विश्वास रख कर उन्होंने धीरज रखा।

अबकी बार जीरिया काले राजा के राज्य की ओर चल दिया। जब वह उसके पास तक पहुॅचा तो वह एक बहुत बड़े जंगल में पहुॅचा। वहॉ पहुॅच कर उसने एक बहुत ज़ोर की आवाज सुनी।

वह वहीं रुक गया और उसने सड़क पर कुछ आता हुआ देखा जो सारे जंगल को नष्ट करता चला आ रहा था। पेड़ पर पेड़ गिरते चले जा रहे थे।

उसने उसकी तरफ ठीक से देखा तो उसने देखा कि वह तो एक सूअर था जो ठीक उसी की तरफ बढ़ा चला आ रहा था।

वह झट से उसके ऊपर गिर पड़ा उसे उठा लिया और अपने से तीन कन्धे दूर फेंक दिया।[38] मगर फिर भी वे आपस में लड़ते ही रहे लड़ते ही रहे लड़ते ही रहे। वे तीन दिन तक लड़ते रहे।

आखिर जीरिया जीत गया। उसने जंगली सूअर को दो हिस्सों में फाड़ कर फेंक दिया। जैसे ही उसने सूअर को फाड़ कर फेंका उस फटे हुए सूअर में से एक जंगली बकरा निकल पड़ा। जीरिया ने जंगली बकरे को भी मार दिया तो उसमें से एक छोटा सा बक्सा निकल पड़ा।

जब उसने छोटा सा बक्सा तोड़ा तो उसमें से तीन घरेलू चिड़ियें उड़ कर चली गयीं। उनमें से उसने दो चिड़ियों को तो मार दिया और एक चिड़िया को पकड़ लिया।

उसी समय क्वामुरिट्ज़ खामी बीमार पड़ गया। मौत का डर उसके दिमाग पर छा गया। क्योंकि जीरिया के पास जो चिड़िया थी उसकी आत्मा उसी में थी। जीरिया ने वह चिड़िया मार दी। चिड़िया के मरते ही क्वामुरिट्ज़ खामी मर गया।[39]

इसके बाद जीरिया काले राजा के महल में घुसा। वहॉ पहुॅच कर उसने अपनी पत्नी के सिवा सबको मार दिया। अपनी पत्नी को वह अपने माता पिता के पास ले कर गया जिसको देख कर उनका

[38] Orgia means one shoulder away is the measure of length equal to the space from finger-tip to finger-tip of the hands when extended horizontally.

[39] This Qvamuritz Khami is the same man who taught the boy in the folktale “Guroo Aur Chela” given in the book “Georgia Ki Lok Kathayen-1”. He dies here.

धीरज और दुख खुशी में बदल गया। फिर वे सब खुशी खुशी एक साथ घर चले गये।

6 राक्षस का भेद[40]

यह लोक कथा उत्तरी अमेरिका महाद्वीप के मैक्सिको देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि एक राजा था जिसके एक बहुत ही बहादुर बेटा था। एक दिन उसका बेटा बोला — "पिता जी मैं दुनिया घूमने के लिये जाना चाहता हूँ।"

राजा उसको इस बात की इजाज़त नहीं देना चाहता था पर राजकुमार की जिद के आगे उसकी एक न चली और उसको अपने बेटे को जाने की इजाजत देनी ही पड़ी।

राजकुमार ने एक बहुत सुन्दर घोड़ा लिया और अपने सफर पर निकल पड़ा। चलते चलते वह बहुत दूर निकल गया। वह एक बहुत बड़े और घने जंगल के पास आ गया था जिसको उसको पार करना था।

वह उस जंगल में घुस गया तो उसने वहाँ एक हाउन्ड कुत्ते[41] और शेर की आवाजें सुनी और उसके बाद उसने चार जानवर देखे

[40] Giant's Secret (El Secreto del Gigante) – a folktale from Mexico, North America.
Adapted from the Web Site : http://www.g-world.org/magictales/
Adopted, retold by Don Genaro Fourzan
[Author's Note : "El Secreto del Gigante" belongs to that most popular group of tales known as the "Rescue from the Ogre" type. It is the story of "The Monster with His Heart in the Egg"

[41] Hound dog is a type of hunting dog

– एक शेर, एक हाउन्ड कुत्ता, एक चील और एक चींटी जो एक हिरन के ढॉचे पर आपस में बहस कर रहे थे।

जैसे ही उन जानवरों ने राजकुमार को देखा तो शेर दहाड़ा — "एक पल रुको ओ। तुम देख रहे हो कि हम सब आपस में इस हिरन के ढॉचे के ऊपर बहस कर रहे हैं पर यह निश्चय नहीं कर पा रहे हैं कि इस मरे हुए हिरन का कौन सा हिस्सा किसका है। अगर तुम इसका ठीक से बॅटवारा कर दो तो हम तुमको इनाम देंगे।"

राजकुमार राजी हो गया और उसने उस हिरन के ढॉचे के चार हिस्से कर दिये। शेर को उसने हिरन का पिछला वाला खूब मॉस वाला[42] हिस्सा दे दिया। कुत्ते को उसने उसकी पसलियॉ दे दीं।

चील को उसने उसके अन्दर का हिस्सा यानी ऑतें आदि दे दीं और चींटी को उसने हिरन का सिर खाने के लिये दे दिया।

चारों जानवर इस बॅटवारे से बहुत खुश थे। शेर राजकुमार से बोला — "हमने तुमको इस बॅटवारे के बदले में इनाम देने का वायदा किया था सो हम अपना वायदा जरूर निभायेंगे।"

उसने अपनी गरदन से एक लम्बा सा मोटा सा बाल तोड़ा और राजकुमार को देते हुए बोला — "लो मेरा यह बाल लो। जब भी तुम शेर बनना चाहो तो बस यह कहना "भगवान और शेर" और तुम एक शेर बन जाओगे।

[42] Translated for the word "Hips"

फिर जब भी तुम फिर से आदमी बनना चाहो तो बस यह कहना कि "भगवान और आदमी" और तुम आदमी बन जाओगे।"

इसी तरह हाउन्ड कुत्ते ने भी अपने शरीर से एक बाल तोड़ कर उसको दिया और बोला — "जब भी तुम हाउन्ड कुत्ता बनना चाहो तो बस यह कहना "भगवान और हाउन्ड" और तुम कुत्ता बन जाओगे और जब तुमको फिर से आदमी बनना हो तो कहना "भगवान और आदमी" और तुम फिर से आदमी बन जाओगे।"

चील ने राजकुमार को अपना एक पंख दिया और कहा कि जब भी उसको चील बनना हो तो वह कहे "भगवान और चील" और जब उसे वापस आदमी की शक्ल में आना हो तो कहे "भगवान और आदमी।"

चींटी ने राजकुमार को अपना एक आगे का बाल[43] दिया और कहा जब भी उसको चींटी बनना हो तो वह कहे "भगवान और चींटी" और जब वह फिर से आदमी बनना चाहे तो कहे "भगवान और आदमी"।"

राजकुमार ने उन सबको बहुत बहुत धन्यवाद दिया और अपने रास्ते चल दिया। चलते चलते एक दिन वह एक किले के पास आ गया। वह किला उसको ऐसा लगा जैसे उसमें कोई रहता न हो।

राजकुमार की इच्छा हुई कि वह उस किले को अन्दर से देखे पर उसके अन्दर जाना तो उसको बिल्कुल ही नामुमकिन लगा

[43] Translated for the word "Antennae"

क्योंकि उसके चारों तरफ बहुत ऊँची और ठोस दीवार खड़ी हुई थी।

इस समय उसको उन चारों जानवरों के दिये हुए इनामों की याद आ गयी जो उसको उन्होंने हिरन का बँटवारा करने के लिये जंगल में दी थीं।

उसने चील का दिया हुआ पंख निकाला और बोला "भगवान और चील"। तुरन्त ही वह एक चील बन गया और उड़ कर उस किले के ऊपर जा पहुँचा।

उसने उस किले की सबसे ऊँची मीनार की एक खिड़की खुली देखी तो वह उसकी तरफ उड़ा और उस खिड़की पर जा कर बैठ गया।

वह खिड़की एक सोने वाले कमरे की थी। उसने उस कमरे में अन्दर झाँका तो देखा कि बहुत सुन्दर लड़की एक पलंग पर सो रही है।

राजकुमार ने कहा "भगवान और आदमी" और वह अपने पुराने रूप में आ गया। आदमी बन कर वह उस लड़की को और अच्छी तरह से देखने के लिये उस कमरे में घुस गया।

वह लड़की जाग गयी और एक राजकुमार को अपने ऊपर झुका हुआ देख कर उससे बोली — "मिस्टर, तुम यहाँ क्या लेने आये हो? यह किला एक राक्षस का है अगर वह तुमको यहाँ देख लेगा वह तुमको बिना किसी रहम के मार देगा।"

राजकुमार बोला — "मैं किसी राक्षस वाक्षस से नहीं डरता क्योंकि मैं तो खतरों से खेलने के लिये ही निकला हूँ। पर जहाँ तक मैं देख रहा हूँ तुम मुझे इस इतने बड़े किले में एक बन्दी दिखायी दे रही हो। अगर मैं तुम्हारी कोई भी सेवा कर सकता हूँ तो मुझे बताओ मैं उसे जरूर करूँगा।"

वह लड़की बोली — "तुम ठीक कहते हो। मैं उस राक्षस की बन्दी हूँ। परन्तु तुमसे सहायता माँगना तो बिल्कुल बेकार है क्योंकि वह राक्षस तो जो भी उससे लड़ने आता है उन सभी को हरा देता है।"

तभी अचानक किले में गरज की सी आवाज सुनायी पड़ी जो वहाँ चारों तरफ गूँज गयी। वह लड़की बोली — "हम तो मारे गये। वह राक्षस तो यहाँ अब कभी भी आ सकता है। और यहाँ तो कोई ऐसी जगह भी नहीं है जहाँ तुम छिप सको।"

राजकुमार बोला — "मिस, तुम डरो नहीं।" उसने जल्दी से चीटी का आगे वाला बाल निकाला और बोला "भगवान और चींटी" और वह तुरन्त ही एक चींटी बन गया।

उसी समय राक्षस वहाँ आ गया। वह उस लड़की से बोला — "मुझे यकीन है कि तुम किसी से बातें कर रही थीं।"

इतना कह कर उसने उस कमरे में चारों तरफ देखा पर जब उसे वहाँ कोई दिखायी नहीं दिया तो वह सन्तुष्ट हो कर वहाँ से चला गया।

राजकुमार ने फिर "भगवान और आदमी" कहा और वह फिर से आदमी की शक्ल में आ गया। वह लड़की तो उसको देख कर इतनी खुश हुई कि खुशी के मारे उसके मुँह से कोई शब्द ही नहीं निकला।

जब वह कुछ होश में आयी तब वह राजकुमार से बोली।

उसने कहा — "मिस्टर, शायद तुम मुझे इस राक्षस से बचा सकते हो। पर इसके लिये तुमको इस राक्षस को मारना पड़ेगा। और उसको मारने से पहले तुमको वह अंडा तोड़ना पड़ेगा जिसमें राक्षस की जान रखी रहती है।

वह अंडा उसने बहुत अच्छी तरह से छिपा कर रखा हुआ है। कोई भी अब तक उस अंडे को ढूँढ नहीं पाया है।"

अगले दिन जब वह राक्षस उस लड़की के कमरे में आया तो लड़की ने उससे कहा — "जनाब, कल मैंने सपने में देखा कि आपकी ज़िन्दगी खतरे में है। एक आदमी उस अंडे को तोड़ रहा है जिसमें आपका भेद छिपा हुआ है।"

"तुम चिन्ता मत करो। मेरा वह अंडा बहुत अच्छी तरह से सुरक्षित रखा हुआ है। उसे कोई नहीं ढूँढ पायेगा।" राक्षस ने उसको विश्वास दिलाया।

राक्षस उस लड़की को विश्वास दिला कर वहाँ से तो चला गया पर उसके मन में अपनी जान की चिन्ता लग गयी। शायद उसकी

जान वाकई खतरे में थी। पलक झपकते ही उसने एक कबूतर का रूप रखा और खिड़की के बाहर उड़ गया।

इस बीच राजकुमार राक्षस को बराबर देख रहा था। उसने तुरन्त ही चील का पंख निकाला और बोला "भगवान और चील"। वह तुरन्त ही चील बन गया और राक्षस के पीछे पीछे ही उड़ गया।

वह कबूतर एक गुफा में घुस गया और उसने एक बक्सा निकाल लिया जिसमें एक अंडा रखा हुआ था। इसी समय वह चील भी वहॉ आ पहुँचा।

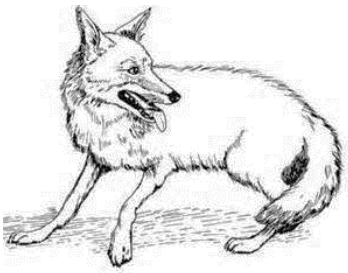

कबूतर ने जब चील को देखा तो वह एक कायोटी[44] में बदल गया और उस अंडे को निगल गया। अंडा निगल कर वह वहॉ से भाग गया।

राजकुमार ने तुरन्त ही शेर का दिया हुआ उसकी गरदन का बाल निकाला और बोला "भगवान और शेर"। यह कहते ही वह शेर में बदल गया और कायोटी के पीछे भाग चला।

उसके बाद राक्षस कायोटी से एक खरगोश में बदल गया और जा कर एक छोटी सी झाड़ी में छिप गया जहॉ शेर उसका पीछा न कर सके।

[44] Coyote (pronounced as "Kaa-yo-tee") is a small desert wolf and is the hero of many Native American folktales. Read many folktales in the book "Chalak Kaayotee-1" by Sushma Gupta in Hindi language.

अब राजकुमार ने कुत्ते का दिया हुआ बाल निकाला और बोला "भगवान और कुत्ता" और वह तुरन्त ही कुत्ता बन गया। अब उस ने खरगोश का पीछा करना शुरू किया।

खरगोश को लगा कि अब तो वह पकड़ा जायेगा सो वह फिर से कबूतर बन गया। राजकुमार भी कुत्ते से चील बन गया और चील ने कबूतर को पकड़ लिया और उसको मार कर अपने पंजों में दबा कर जमीन पर उतर आया।

जमीन पर ला कर उसने उसका पेट फाड़ डाला। उसके पेट से अंडा निकाल कर उसने अपनी चोंच की एक ही मार से उसको तोड़ डाला। जैसे ही वह अंडा टूटा वहाँ मरे हुए कबूतर की जगह मरा हुआ राक्षस पड़ा था।

अब वह चील वापस किले में उड़ आया और उस लड़की के सोने के कमरे में पहुँचा और बोला "भगवान और आदमी"। तुरन्त ही वह चील राजकुमार में बदल गया।

राजकुमार बन कर उसने उस लड़की को अपनी बाँहों में ले लिया। अब उनको राक्षस का कोई डर नहीं था सो उन दोनों ने शादी कर ली और उस उजाड़ किले को चहचहाते रंगीन किले में बदल दिया।

7 मेंढकी राजकुमारी[45]

यह लोक कथा एशिया महाद्वीप के रूस देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

यह बहुत दिनों पहले की बात है कि एक बार रूस में एक राजा और रानी रहते थे। उनके तीन बेटे थे।

जब वे राजकुमार बड़े हो गये तो राजा ने उनको बुलाया और बोला — "मेरे प्यारे बेटों, अब तुम्हारी शादी का समय आ गया है। तुम लोग ऐसा करो कि अपने अपने तीर कमान लो और उससे अपना अपना तीर फेंको। जो लड़की तुम्हारा तीर वापस ले कर आयेगी वही तुम्हारी दुलहिन होगी।"

तीनों राजकुमारों ने पिता को सिर झुकाया, अपना अपना तीर कमान उठाया, तीर कमान पर चढ़ाया और कमान की डोरी खींच कर तीर चला दिया।

सबसे बड़े बेटे का तीर एक कुलीन आदमी के बागीचे में जा कर गिरा जहॉ से उसकी बेटी उसका तीर वापस ले कर आ गयी।

दूसरे बेटे का तीर एक व्यापारी के बागीचे में जा कर गिरा जहॉ से उसकी बेटी उसका तीर वापस ले कर आ गयी।

---

[45] The Frog Princess – a folktale from Russia, Asia. Adapted from the Book :
"Russian Folk-Tales". Retold by James Riordan. Oxford, OUP. 2000. 96 p.
[A similar story is told in India too in which the prince's arrow is caught by a female monkey. So he has to marry the female monkry. Read this story in the book "Mere Bachpan Ki Kahaniyan" under the title "Bandariya Dulhaniya" written by Sushma Gupta in Hindi language.]

और तीसरे और सबसे छोटे बेटे का तीर? वह कहाँ गिरा और उसे कौन ले कर आया?

उसके तीसरे सबसे छोटे बेटे राजकुमार इवान[46] ने जो अपना तीर चलाया तो वह इतना ऊँचा गया कि उसको तो वह दिखायी ही नहीं पड़ा।

वह बेचारा आधे दिन तक अपना तीर ढूँढता रहा तब कहीं जा कर उसको वह तीर जंगल के एक तालाब में मिला।

एक मेंढकी जो पानी में उगी हुई लिली के एक फूल पर बैठी हुई थी उसने उसको अपने मुँह में पकड़ा हुआ था।

जब राजकुमार इवान ने उस मेंढकी से अपना तीर वापस माँगा तो वह बोली — "मैं तुम्हारा तीर तभी वापस करूँगी जब तुम मुझे अपनी दुलहिन बनाओगे।"

राजकुमार इवान कुछ नफरत के साथ बोला — "पर एक राजकुमार एक मेंढकी से शादी कैसे कर सकता है?"

राजकुमार अपने तीर को एक मेंढकी के मुँह में देख कर बहुत गुस्सा था पर वह अपने पिता की बात नहीं टाल सकता था इसलिये उसने उस मेंढकी को उठाया और उसको अपने महल ले गया।

[46] Prince Ivan – name of the third and the youngest Prince

जब उसने राजा को अपनी कहानी सुनायी और उसको मेंढकी दिखायी तो राजा ने कहा — "मेरे बेटे, अगर तुम्हारी किस्मत में एक मेंढकी से ही शादी करना लिखा है तो यही सही।"

सो उस रविवार को तीन शादियॉ हुईं – बड़े बेटे की शादी एक कुलीन आदमी की बेटी से हुई, बीच वाले बेटे की शादी एक व्यापारी की बेटी से हुई और तीसरे सबसे छोटे बेटे इवान की शादी एक मेंढकी से हुई।

कुछ समय बीत गया तो राजा ने अपने तीनों बेटों को फिर बुलाया और कहा — "मेरे प्यारे बेटों, मैं यह देखना चाहता हूँ कि मेरे किस बेटे की पत्नी मेरे लिये सबसे अच्छी कमीज बना सकती है?"

तीनों बेटों ने पिता को सिर झुकाया और अपने अपने घर चले गये। दोनों बड़े बेटों को तो कोई चिन्ता नहीं थी क्योंकि वे जानते थे कि उनकी पत्नियॉ को सिलाई आती थी पर सबसे छोटा वाला बेटा दुखी मन से अपने घर आया।

उसको दुखी देख कर मेंढकी कूदती हुई उसके पास आयी और टर्रायी — "ओ राजकुमार इवान, तुम्हारा यह इतना सुन्दर सिर लटका हुआ क्यों है?"

इवान बोला — "आज तो मुझे नीचा देखना पड़ेगा। राजा ने कहा है कि तुम उनके लिये सुबह तक एक कमीज सिल दो।"

मेंढकी बोली — "अरे बस इतनी सी बात, तुम खाना खाओ और सोओ। सुबह तो शाम से हमेशा ही ज़्यादा ही खूबसूरत होती है।"

राजकुमार खाना खा कर सो गया। जैसे ही राजकुमार सो गया मेंढकी दरवाजे से कूद कर बाहर चबूतरे पर निकल गयी। उसने अपनी मेंढकी की खाल उतार दी। वह अब एक इतनी सुन्दर राजकुमारी बन गयी थी कि उसके बराबर की सुन्दर राजकुमारी मिलना मुश्किल था।

उसने ताली बजायी और बोली —

ओ नौकरानियों मेरी पुकार सुनो, एक कमीज सिलो जैसी मेरे पिता पहनते थे

बस रात भर में कमीज तैयार थी। सुबह जब राजकुमार इवान जागा तो वह मेंढकी मेज पर बैठी थी। उसके हाथ में एक कढ़े हुए कपड़े में लिपटी हुए एक कमीज थी।

राजकुमार तो उसको देख कर बहुत खुश हो गया। उसको ले कर वह तुरन्त ही राजा के पास गया। राजा उस समय अपने बड़े बेटों की लायी हुई कमीजें देख रहा था।

उसके पहले बेटे ने उसके सामने अपनी लायी कमीज फैला कर दिखायी। राजा ने उस कमीज को उठाया और बोला — "यह कमीज तो एक किसान के पहनने लायक भी नहीं है।"

फिर उसके दूसरे बेटे ने अपनी लायी हुई कमीज राजा के सामने फैलायी तो राजा उसको देख कर नाक भौं सिकोड़ कर बोला — "अरे, इस कमीज को तो कोई बरतन बनाने वाला भी नहीं पहनेगा।"

अब इवान की बारी आयी तो उसने भी अपनी लायी कमीज राजा के सामने फैलायी। उसकी कमीज तो बहुत ही सुन्दर सोने और चॉदी के तारों से कढ़ी हुई थी। उसको देखते ही राजा का दिल खुश हो गया और उसकी ऑखों में चमक आ गयी।

वह बोला — "हॉ यह कमीज है राजा के पहनने के लायक।"

कमीजें दिखा कर तीनों राजकुमार अपने अपने घर चले गये। दोनों बड़े वाले बेटे बुड़बुड़ाते चले जा रहे थे — "हम लोग इवान की पत्नी की बेकार में ही हॅसी उड़ा रहे थे। लगता है कि वह जरूर ही कोई जादूगरनी है।"

फिर कुछ समय और बीत गया। राजा ने अपने तीनों बेटों को एक बार फिर बुलाया और कहा — "मेरे प्यारे बेटों, तुम्हारी पत्नियों को अबकी बार मेरे लिये सुबह तक एक डबल रोटी बनानी है। देखते हैं कि तीनों में से सबसे अच्छा खाना कौन बनाता है।"

इस बार फिर राजकुमार इवान फिर महल से बहुत दुखी हो कर चला। जब वह अपने घर आया तो उसकी मेंढकी पत्नी ने पूछा —

"ओ राजकुमार इवान, तुम्हारा यह इतना सुन्दर सिर लटका हुआ क्यों है?"

उसने उसको राजा का हुकुम सुनाया तो वह बोली — "अरे बस इतनी सी बात? तुम खाना खाओ और सोओ। सुबह तो शाम से हमेशा ही ज़्यादा ही खूबसूरत होती है।"

इस बीच दोनों बड़े बेटों ने शाही रसोईघर से एक बुढ़िया को बुलवा भेजा और यह देखने के लिये उसको इवान के घर भेजा कि देख कर आओ कि वह मेंढकी खाना कैसे बनाती है।

पर मेंढकी ने भी यह भॉप लिया कि उन दोनों के मन में क्या था। उसने थोड़ा सा आटा बनाया, उसको बेला और सीधे आग में डाल दिया।

वह बुढ़िया यह खबर देखने के लिये जल्दी से सीधी उन दोनों भाइयों के पास आयी तो उन दोनों भाइयों की पत्नियों ने भी ऐसा ही किया जैसा मेंढकी ने किया था।

पर जैसे ही वह बुढ़िया वहॉ से चली गयी मेंढकी कूद कर दरवाजे के बाहर चबूतरे पर गयी और अपनी मेंढकी की खाल उतार दी। वह अब एक इतनी सुन्दर राजकुमारी बन गयी थी कि उसके बराबर की सुन्दर राजकुमारी मिलना मुश्किल था।

उसने फिर ताली बजायी और बोली —

ओ नौकरानियों इतनी मीठी डबल रोटी बनाओ, जैसी मेरे पिता खाते थे

अगली सुबह जब राजकुमार इवान जागा तो एक सफेद कपड़े में लिपटी हुई एक करारी सी डबल रोटी देख कर बहुत खुश हो गया। वह उसको अपने पिता के पास ले गया। वहाँ उसका पिता उसके भाइयों की लायी डबल रोटियाँ देख रहा था।

सबसे पहले उसने अपने सबसे बड़े बेटे के घर की बनी हुई डबल रोटी देखी। उसकी डबल रोटी चूल्हे की आग से बिल्कुल काली हो गयी थी और उसमें गुठलियाँ पड़ गयी थीं। उसने गुस्सा हो कर वह डबल रोटी रसोईघर में भेज दी।

फिर उसने अपने दूसरे बेटे की डबल रोटी देखी तो वह भी आग से जल कर काली हो गयी थी और उसमें भी गुठलियाँ पड़ गयी थीं। वह डबल रोटी भी उसने रसोईघर में भिजवा दी।

पर जब इवान ने अपनी डबल रोटी राजा को दी तो राजा उसको देख कर बहुत खुश हो गया और उसके मुँह से निकला — "यह है डबल रोटी जो शाही खाने की मेज की शान बढ़ायेगी।"

राजा ने उसी दिन शाम को एक दावत का इन्तजाम किया और अपने तीनों बेटों से उस दावत में अपनी अपनी पत्नियों को लाने के लिये कहा। वह देखना चाहता था कि उसकी तीनों बहुओं में से कौन सी बहू सबसे अच्छा नाचती थी।

एक बार फिर इवान महल से बहुत दुखी हो कर चला। वह सोचता जा रहा था कि आज तो वह गया। वह मेंढकी बेचारी कैसे नाचेगी।

जब वह अपने घर आया तो उसकी मेंढकी पत्नी ने पूछा — "ओ राजकुमार इवान, तुम्हारा यह इतना सुन्दर सिर लटका हुआ क्यों है?"

उसने उसको राजा का हुकुम सुना दिया तो वह बोली — "अरे बस इतनी सी बात? तुम दुखी न हो राजकुमार इवान। तुम शाम को ऐसा करना कि तुम अकेले ही दावत में जाना। मैं तुम्हारे बाद में आऊँगी।

जब तुम्हें बिजली की कड़क की आवाज सुनायी दे तो अपने मेहमानों से कहना कि तुम्हारी पत्नी अपनी गाड़ी में आ रही है।"

सो राजकुमार इवान उस दावत में अकेले ही चला गया जबकि उसके दोनों भाई अपनी अपनी पत्नियों के साथ आये थे। उनकी पत्नियों ने अपने सबसे अच्छे कपड़े और गहने पहन रखे थे।

राजा और रानी, उनके बेटे और उनकी पत्नियॉ और सब कुलीन मेहमान खाना खाने बैठे ही थे कि अचानक बाहर बिजली कड़की और सारा महल हिल गया। सब लोग घबरा गये।

इवान ने सब लोगों को शान्त किया — "घबराओ नहीं ओ भले लोगों। यह मेरी पत्नी है जो अपनी गाड़ी में आ रही है।"

तभी उसकी पत्नी अन्दर आयी। वह एक बहुत ही सुन्दर राजकुमारी थी। वह नीले रंग का गाउन पहने थी

जिस पर चॉदी के सितारे जड़े हुए थे और उसके सुनहरे बालों में आधा चॉद सजा हुआ था।

उसकी सुन्दरता को शब्दों में बखान नहीं किया जा सकता। राजकुमार इवान उसको देख कर बहुत खुश हो गया और वहॉ बैठे मेहमान भी उसको और उसके बढ़िया कपड़ों और गहनों के ही देखे जा रहे थे।

लोगों ने खाना खाना शुरू किया तो बड़े भाइयों की पत्नियों ने देखा कि मेंढकी राजकुमारी ने भुने हुए हंस[47] की हड्डियॉ अपनी दॉयी आस्तीन में छिपा लीं और बची हुई शराब उसने बॉयी आस्तीन में छिपा ली। वे उसको देखती रहीं – हड्डियॉ एक आस्तीन में और शराब की कुछ बूँदें दूसरी आस्तीन में।

जब खाना खतम हो गया तो राजा ने नाच शुरू करने का हुकुम दिया। मेंढकी राजकुमारी ने नाचना शुरू किया। वह घूम घूम कर नाचती रही और मेहमान लोग पीछे हट कर उसका नाच देखते रहे।

जब उसने अपनी बॉयी आस्तीन हिलायी तो उसमें से एक चमकती हुई झील निकल पड़ी और जब उसने अपनी दॉयी आस्तीन हिलायी तो उसमें से कई हंस निकल कर उस झील में तैरने लगे।

यह देख कर वहॉ बैठे सारे कुलीन मेहमानों को बड़ा आश्चर्य हुआ।

[47] Translated for the word “Swan”.

उसके बाद दोनों बड़े भाइयों की पत्नियों ने नाचना शुरू किया। जब उन्होंने अपना एक हाथ हिलाया तो उनकी भीगी हुई आस्तीन राजा के लाल चेहरे पर जा कर लगीं और जब दूसरा हाथ हिलाया तो दूसरी आस्तीन से हड्डियॉ निकल कर राजा की ऑख में जा पड़ीं।

यह देख कर राजा बहुत नाराज हुआ और नाच छोड़ कर चला गया। पर इस बीच राजकुमार इवान यह देख कर बहुत खुश हुआ कि उसकी पत्नी एक बहुत ही अक्लमन्द और सुन्दर राजकुमारी थी।

पर उसको डर भी लगा कि उसकी पत्नी कहीं फिर से मेंढकी में न बदल जाये सो वह महल से चुपचाप खिसक लिया और घर चला गया। वहॉ उसने उसकी मेंढक वाली खाल उठा कर आग में डाल दी।

जब उसकी पत्नी वापस आयी तो उसको घर में अपनी खाल नहीं मिली तो वह रो पड़ी और बोली — "ओह राजकुमार इवान, यह तुमने क्या किया? अगर तुमने केवल तीन दिन और इन्तजार किया होता तो हम लोग हमेशा के लिये खुशी खुशी रह रहे होते। अब हमको अलग होना पड़ेगा।

और अगर तुम मुझे ढूँढना भी चाहोगे तो तुमको "एक बीसी और नौ"[48] जमीन के भी आगे "भयानक पुरानी हड्डियों के राज्य"[49] में से हो कर जाना पड़ेगा।"

यह कह कर वह एक भूरे रंग की कोयल में बदल गयी और खिड़की से बाहर उड़ गयी।

एक साल गुजर गया और राजकुमार इवान अपनी पत्नी को ढूँढता रहा। जब दूसरा साल शुरू हुआ तो उसने अपने पिता से आशीर्वाद लिया और अपनी पत्नी को ढूँढने चल दिया।

यह तो पता नहीं कि इवान ऊपर चला या नीचे चला, दूर चला या पास चला क्योंकि मैंने सुना नहीं, बहुत समय तक चला या थोड़ी देर तक चला क्योंकि मैं इस बात का अन्दाजा भी नहीं लगा सका।

पर मुझे इतना पता है कि अपनी पत्नी को ढूँढते ढूँढते उसके जूते बहुत जल्दी ही टूट गये, उसके कपड़े फट गये और उसका चेहरा बहुत दुबला हो गया और वह पीला पड़ गया।

एक दिन जब उसने अपनी सारी उम्मीदें छोड़ दी थीं और वह

जंगल के एक खुले हिस्से में घूम रहा था तो वहाँ उसको एक झोंपड़ी दिखायी दी जो मुर्गी की टाँगों पर खड़ी थी और बराबर घूमे जा रही थी।

[48] Translated for thr words "One Score and Nine"

[49] Translated for the words "Realm of Old Bones the Dread"

इवान बोला — "ओ छोटी झोंपड़ी, ओ छोटी झोंपड़ी। मेहरबानी करके अपनी पीछे वाला हिस्सा तुम पेड़ों की तरफ कर लो और अपना सामने का हिस्सा मेरी तरफ कर लो।"

तुरन्त ही वह झोंपड़ी रुक गयी और उसमें अन्दर जाने के लिये एक दरवाजा खुल गया। इवान उस दरवाजे में से उस झोंपड़ी में घुसा। जैसे ही उसने उस झोंपड़ी के अन्दर पैर रखा तो उसको वहाँ एक बुढ़िया दिखायी दी।

उस बुढ़िया ने इवान से पूछा — "तुम कहाँ जा रहे हो?"

इवान ने उसको अपनी सारी कहानी सुनाते हुए जवाब दिया — "दादी माँ, मैं अपनी मेंढकी राजकुमारी को ढूँढ रहा हूँ।"

बाबा यागा ने अपना सिर ना में हिलाया और एक लम्बी सी साँस ले कर बोली — "ओह राजकुमार इवान, तुमने उस मेंढकी की खाल जलायी ही क्यों? क्योंकि वह "अक्लमन्द येलेना"[50] ही तो तुम्हारी मेंढकी पत्नी थी।

वह अपने ताकतवर पिता से भी बढ़ कर अक्लमन्द थी इसी लिये उसका पिता उससे इतना नाराज था कि उसने उसको उसकी चौदहवीं सालगिरह पर तीन साल के लिये मेंढकी में बदल दिया था।"

राजकुमार इवान दुखी हो कर बोला — "लेकिन अभी मैं क्या करूँ दादी माँ, मैं उसको ढूँढने के लिये कुछ भी करूँगा।"

[50] Yelena – Yelena is a fairy in fairy tales of Ruasia.

बाबा यागा आगे बोली — "अभी उसको भयानक पुरानी हड्डियों[51] ने अपने कब्जे में ले रखा है और वहाँ से उसको छुड़ाना आसान नहीं है क्योंकि आज तक उसको कोई मार नहीं सका है।

उसकी आत्मा एक सुई की नोक में है। वह सुई एक अंडे में है। वह अंडा एक बतख में है। वह बतख एक खरगोश में है। और वह खरगोश पत्थर के एक बक्से में है।

वह बक्सा एक ऊँचे से ओक के पेड़[52] के सबसे ऊपर रखा हुआ है और वह पुरानी हड्डी उसकी अपनी जान से भी ज़्यादा अच्छी तरह से रखवाली करता है।"

वह बूढ़ी जादूगरनी आगे बोली — "लो यह धागे का एक गोला ले जाओ। इसको तुम अपने सामने फेंक देना। फिर यह जिधर भी जाये तुम इसके पीछे पीछे चले जाना। यह तुमको रास्ता दिखायेगा।"

बाबा यागा को उसकी सहायता के लिये धन्यवाद दे कर इवान ने धागे का वह गोला अपने सामने फेंक दिया और जंगल में उसके पीछे पीछे चलने लगा।

इवान चलता गया चलता गया और एक साफ खाली जगह आ निकला। वहाँ उसको एक बड़ा कत्थई रंग का भालू मिल गया।

[51] Translated for the words "Old Bones" – name of the giant who had captured the frog princess
[52] Oak tree is a very large shady tree.

वह उस भालू के ऊपर तीर चलाने ही वाला था कि वह भालू उससे आदमी की आवाज में बोला — "मुझे मत मारो राजकुमार इवान। तुम्हें किसी दिन मेरी जरूरत पड़ेगी।"

राजकुमार को उस भालू पर दया आ गयी। उसने उसको छोड़ दिया और आगे बढ़ गया। आगे जा कर उसको अपने ऊपर उड़ता हुआ एक सफेद नर बतख[53] मिला।

वह उसको भी अपने तीर से मारना चाहता था कि वह नर बतख भी आदमी की आवाज में बोला — "मुझे मत मारो राजकुमार इवान। तुम्हें किसी दिन मेरी जरूरत पड़ेगी।" राजकुमार ने उसकी ज़िन्दगी भी बख्श दी और आगे बढ़ गया।

उसी समय एक भेंगा खरगोश उसका रास्ता काटता हुआ वहाँ से गुजर गया। राजकुमार ने जल्दी से अपना निशाना साधा और उसको तीर मारने ही वाला था कि वह खरगोश भी आदमी आवाज में बोला — "मुझे मत मारो राजकुमार इवान। तुम्हें किसी दिन मेरी जरूरत पड़ेगी।"

राजकुमार ने उसकी भी ज़िन्दगी बख्श दी और अपने धागे के गोले के पीछे पीछे चलता हुआ आगे बढ़ गया।

[53] Translated for the word "Drake"

चलते चलते वह एक झील के पास आया तो झील के किनारे पर उसको एक पाइक मछली[54] पड़ी हुई मिली। वह हवा के लिये तरस रही थी उसको हवा की जरूरत थी।

वह मछली बोली — "मुझ पर दया करो राजकुमार इवान। मुझे इस झील में फेंक दो क्योंकि एक दिन तुमको मेरी जरूरत पड़ेगी।"

राजकुमार इवान ने उस मछली को झील में फेंक दिया और फिर अपने धागे के गोले के पीछे चलता हुआ आगे बढ़ गया।

काफी शाम हो जाने के बाद वह एक ओक के पेड़ के पास आया जो बहुत ऊँचा और मजबूत था। उस पेड़ की सबसे ऊँची शाखाओं पर पत्थर का एक बक्सा रखा था जिस तक पहुँचना ही नामुमकिन सा था।

इवान अभी यह सोच ही रहा था कि वह उस बक्से को नीचे कैसे ले कर आये कि कहीं से वह कत्थई भालू वहाँ आ गया। उसने अपने मजबूत हाथों से उस पेड़ का तना पकड़ कर उसको जड़ से उखाड़ लिया।

उसके ऊपर रखा बक्सा नीचे गिर कर टूट गया और उसमें से एक खरगोश निकल कर तेज़ी से भाग गया।

तभी वह भेंगा खरगोश वहाँ आ गया। उसने उसका पीछा किया और उसको पकड़ कर फाड़ डाला। जैसे ही उस भेंगे खरगोश

[54] Pike fish is a large size fish

ने उस खरगोश को फाड़ा उसमे से एक बतख निकल कर ऊपर आसमान में उड़ गयी।

पल भर में ही सफेद नर बतख जिसकी ज़िन्दगी इवान ने बख्शी थी उसके ऊपर था और उसने उस बतख को इतनी ज़ोर से मारा कि उसमें से उसका अंडा निकल पड़ा। अंडा ऊपर से गिरा तो झील में गिरा।

यह देख कर तो इवान रो पड़ा। उस झील में अब वह उस अंडे को कैसे ढूँढेगा?

पर उसकी खुशी का ठिकाना न रहा जब उसने देखा कि पाइक मछली उस अंडे को लिये हुए किनारे पर तैरती चली आ रही है। राजकुमार ने तुरन्त ही उस अंडे को तोड़ा और उसमें सुई को ढूँढा। उसमें से सुई निकाल कर उसने उसको मोड़ना शुरू किया।

जितना ज़्यादा वह राजकुमार उस सुई को मोड़ता जाता था वह भयानक पुरानी हड्डियाँ भी अपने काले पत्थर के महल में बैठा उतना ही ज़्यादा ऐंठता जाता था और बल खाता जाता था।

आखिर उसने वह सुई तोड़ दी और उस सुई के टूटते ही वह भयानक पुरानी हड्डियाँ भी मर गया।

जैसे ही राजकुमार ने सोचा कि अब वह राजकुमारी को ले कर आये तो उसके सामने तो राजकुमारी येलैना खुद ही खड़ी थी।

वह एक लम्बी सी साँस ले कर बोली — "ओह राजकुमार इवान, तुमने यहाँ आने में कितनी देर लगा दी मैं तो इस भयानक

पुरानी हड्डियॉ से शादी करने वाली थी। इसने मुझे अपने काबू में कर रखा था।"

आखीर में दोनों मिल गये और रूस वापस लौट गये। वहॉ वे फिर बहुत साल तक खुशी खुशी रहे।

8 दो समुद्री सौदागर[55]

एक बार की बात है कि दो दोस्त थे। वे दोनों ही समुद्री सौदागर थे और बहुत बड़े सौदागर थे जिन्होंने सातों समुद्रों में अपने जहाज़ चला रखे थे।

उनमें से एक सौदागर के एक बेटा था पर दूसरे के कोई बच्चा नहीं था पर वे दोनों ही उस लड़के को बहुत प्यार करते थे।

एक दिन बिना बच्चे वाले सौदागर को अपना सामान बेचने के लिये जहाज़ पर जाना था। जब वह जाने के लिये तैयार हुआ तो उसके दोस्त के बेटे ने उससे बहुत जिद की कि वह उसको भी साथ ले ले। क्योंकि इस तरह उसको भी जहाज़ चलाने और सामान बेचने का कुछ अनुभव हो जायेगा।

फिर उसने अपने पिता से भी बहुत कहा कि वह उसको उसके गौडफादर के साथ जहाज़ पर भेज दे। पर न तो उसका पिता और न ही उसका गौडफादर यह चाहता था कि वह अभी समुद्री यात्रा पर जाये।

पर जब वह लड़का नहीं माना तो दोनों को उसकी बात मानने के लिये राजी होना पड़ा सो वह अपने गौडफादर के जहाज़ के साथ वाले जहाज़ पर चल पड़ा।

---

[55] The Two Sea Merchants (Story No 171) – a folktale from Italy from its Palermo area.
Adapted from the book : "Italian Folktales", by Italo Calvino. Translated by George Martin in 1980.

चलते चलते वे गहरे समुद्र में आ गये। समय की बात कि वहॉ एक तूफान आ गया। वह तूफान इतना भयानक था कि दोनों जहाज़ एक दूसरे से अलग हो गये।

गौडफादर का जहाज़ तो उस तूफान में से बच कर बाहर आ गया पर उस नौजवान का जहाज़ समुद्र की तली में बैठ गया। जहाज़ पर जितने भी लोग थे सब डूब गये।

किस्मत से इस नौजवान को एक तख्ता मिल गया तो वह उसके सहारे तैर कर एक टापू के किनारे लग गया।

वहॉ वह नाउम्मीद सा इधर उधर घूमता रहा। घूमते घूमते वह एक ऐसे जंगल में आ गया जहॉ जंगली जानवर घूम रहे थे। उन जानवरों से डर कर उसने रात एक ओक के पेड़ के ऊपर गुजारी।

सुबह को जब उसने देख लिया कि उसके आस पास कोई जंगली जानवर नहीं है तो वह पेड़ से नीचे उतरा और उसने फिर उसी जंगल में घूमना शुरू कर दिया।

घूमते घूमते वह एक ऐसी ऊॅची दीवार के पास आ गया जिसका तो उसको कोई ओर छोर ही दिखायी नहीं दे रहा था। वह पास के एक पेड़ पर चढ़ गया और फिर वहॉ से उस दीवार पर कूद गया।

वहॉ से उसने अन्दर झॉक कर देखा तो देखा कि उस दीवार के दूसरी तरफ तो पूरा का पूरा एक शहर बसा हुआ था। ऐसा लगता

था कि जैसे वह दीवार उस शहर को जंगली जानवरों से बचाने के लिये बनायी गयी थी।

किसी तरह से वह नौजवान उस दीवार से शहर की तरफ नीचे की तरफ उतर गया और शहर में घुसा। उसने सोचा कि सबसे पहले वह कुछ खाने के लिये खरीदेगा फिर वह कुछ और करेगा सो वह एक सड़क पर चला जिसके दोनों तरफ दूकानें थीं।

वहाँ वह एक बेकरी[56] की दूकान में घुस गया और उससे डबल रोटी माँगी पर दूकान वाले ने उसको कोई जवाब ही नहीं दिया।

फिर वह एक सूअर का माँस बेचने वाले की दूकान पर गया और वहाँ पर उसने उससे सलामी माँगी पर उस दूकान वाले ने भी उसको कोई जवाब नहीं दिया।

इस तरह वह कई दूकानों पर गया पर किसी ने उसको कोई जवाब नहीं दिया।

नौजवान ने सोचा कि उसको उस जगह के राजा के पास जाना चाहिये और उससे बात करनी चाहिये कि यह सब क्या मामला है सो वह सीधे राजा के महल की तरफ चल दिया।

[56] Bakery is a place where the things are made by the process of baking, such as bread, biscuits, cakes, buns etc.

महल के दरवाजे पर पहुँच कर उसने चौकीदार से कहा कि वह राजा से बात करना चाहता था वह उसको राजा के पास ले चले पर चौकीदार भी कुछ नहीं बोला वह भी चुप ही रहा।

यह सब देख कर वह नौजवान बहुत परेशान हुआ क्योंकि वह किसी से बात ही नहीं कर पा रहा था। फिर वह खुद ही महल में चला गया और वहाँ के कमरों में घूमने लगा।

घूमते घूमते वह एक बहुत ही सुन्दर कमरे में आ गया जिसमें एक शाही पलंग पड़ा हुआ था। उसके पास ही एक शाही मेज रखी थी जिसके ऊपर एक शाही हाथ धोने का बरतन रखा हुआ था।

उसने सोचा कि यहाँ तो मुझसे कोई कुछ कह ही नहीं रहा है सो मैं इस पलंग पर थोड़ी देर के लिये सो जाता हूँ। तभी दो नौजवान लड़कियाँ वहाँ आयीं और बिना कुछ बोले उन्होंने एक मेज पर रात का खाना लगाया। उसने पेट भर कर खाना खाया और फिर उसी पलंग पर सो गया।

इस तरह से उसने इस शान्त शहर से अपनी नयी ज़िन्दगी शुरू की। एक रात जब वह अपने इस शाही बिस्तर में सो रहा था तो वहाँ एक स्त्री अपनी दो दासियों के साथ आयी।

वह सिर से पाँव तक ढकी हुई थी। उसने उस नौजवान से पूछा — "क्या तुम साहसी हो?"

"हॉ हूँ।"

"अगर ऐसा है तो मैं तुमको अपना भेद बताती हूँ। मैं सम्राट स्कौरज़ोन[57] की बेटी हूँ। उन्होंने मरने से पहले एक जादूगर[58] से इस सारे शहर पर जादू डलवा दिया था। उस जादू में इस शहर में सारे रहने वाले, नौकर, सेना और मैं खुद भी शामिल थे।

पर अगर तुम मेरे साथ मुझको बिना देखे एक साल तक यहॉ रहोगे और मेरा यह भेद भी किसी के ऊपर भी नहीं खोलोगे तभी यह जादू टूटेगा। फिर तुम यहॉ के सम्राट हो जाओगे और मैं रानी और फिर सभी तुम्हारी तारीफ करेंगे।

नौजवान बोला — "मैं साहसी भी हूँ और ताकतवर भी।"

पर कुछ दिन बाद ही उसने उस लड़की से कहा कि वहॉ उसके साथ सारे साल शान्ति से रहने के लिये उसको अपने पिता के पास जा कर उनसे, अपनी मॉ से और अपने गौडफादर सबसे इजाज़त लेनी पड़ेगी। लेकिन उन सबसे इजाज़त ले कर वह जल्दी ही वहॉ वापस लौट आयेगा।

हालॅकि उस लड़की को उस पर पूरा यकीन नहीं था कि वह वहॉ से जा कर फिर वापस आ जायेगा पर फिर भी जब उस नौजवान ने उससे बार बार यही कहा तो उसने उसके लिये एक

[57] Scorzone

[58] Translated for the word "Sorcerer".

जहाज़ तैयार करा दिया और अपनी कुछ कीमती चीज़ें भी उसके जहाज़ पर रखवा दीं।

फिर उसने उसको एक छड़ी दी और कहा — "तुम यह छड़ी रखो। तुम जहॉ भी जाना चाहो इसको बोल देना यह तुमको उसी पल वहॉ पहुँचा देगी। पर एक बात तुम हमेशा याद रखना कि तुम मेरा यह भेद किसी पर खोलना नहीं।"

"ठीक है" कह कर वह नौजवान जहाज़ पर चढ़ा और उस छड़ी पर हाथ मारा तो उसने अपने आपको अपने पिता के शहर के बन्दरगाह पर पाया। उसने वे कीमती चीज़ें वहॉ की सबसे अच्छी सराय में ले जाने का हुकुम दिया और वह भी उसी सराय में जा कर ठहर गया।

उसने वहॉ के लोगों से पूछा — "क्या तुम लोग यहॉ किसी समुद्री सौदागर को जानते हो?"

लोगों ने बताया कि उस शहर में दो यात्री समुद्री सौदागर थे। वे दोनों आपस में बहुत अच्छे दोस्त थे और वहॉ के बहुत ही जाने माने सौदागर थे पर हाल ही में वे दोनों ही बहुत गरीब हो गये हैं।

उनमें से एक सौदागर के एक बेटा था जो एक बार दूसरे सौदागर के साथ उसके जहाज़ पर गया और वहॉ समुद्र में खो गया।

लोगों ने उसको बताया कि वह एक ऐक्सीडैन्ट था पर उसके पिता ने यह मानने से इनकार कर दिया कि वह एक ऐक्सीडैन्ट था।

पर उसने इसके लिये अपने दोस्त को जिम्मेदार ठहराया और उस पर मुकदमा चला दिया। उसी मुकदमे में दोनों अपना अपना पैसा गॅवा बैठे।

यह सुन कर उस नौजवान ने अपने पिता को बुलवाया तो उसके पिता ने उसको पहचाना ही नहीं।

लड़का बोला — "मैं आपके और आपके साथी के साथ एक व्यापारिक रिश्ता जोड़ना चाहता हूॅ क्योंकि आपको समुद्री सौदागर होने का अच्छा अनुभव है।"

पिता बोला — "यह नामुमकिन है। मैं और मेरा साथी दोनों ही दिवालिया हो चुके हैं क्योंकि हम लोग अपने बेटे के ऊपर मुकदमा लड़ रहे थे और उसी में हमारा सारा पैसा खत्म हो गया है। ऐसा इस लिये हुआ क्योंकि मेरे साथी की वजह से मेरा बेटा मर गया।"

नौजवान बोला — "इस बात का इससे कोई मतलब नहीं है कि आपके पास पैसा है या नहीं है। व्यापार के लिये पैसा मैं लगाऊॅगा।"

फिर उसने अपने पिता के लिये बहुत बढ़िया खाना लाने का आर्डर दिया और पिता के दोस्त को भी बुलवा लिया। उन दोनों की पत्नियों को भी बुलवा लिया गया। किसी ने भी उसको नहीं पहचाना।

जब उस सराय में सबने एक दूसरे को देखा तो दोनों आदमी और उनकी पत्नियॉ एक दूसरे पर चिल्ला पड़े और लड़ने लगे क्योंकि अब तो वे एक दूसरे के दुश्मन थे।

उन्होंने साथ खाने की कोशिश तो की पर क्योंकि अब वे एक दूसरे के दुश्मन हो चुके थे इसलिये उनके गले से खाना नीचे ही नहीं उतर पा रहा था।

तब उस नौजवान ने अपनी प्लेट से एक चम्मच भर कर खाना उठाया और अपने पिता की तरफ यह कहते हुए बढ़ाया — "पिता जी, अपने बेटे के हाथ से यह कौर स्वीकार कीजिये। आपका बेटा ज़िन्दा है सुरक्षित है और आपके सामने बैठा है।"

यह सुन कर वे सब खुशी से उछल पड़े। खुशी से पागल हो कर सब एक दूसरे से गले मिले और रो पड़े। लड़के ने अपनी लायी कीमती चीज़ें अपने पिता और गौडफादर में बॉट दीं ताकि वे फिर से अपना काम शुरू कर सकें।

फिर वह बोला — "पिता जी, अभी मुझे जाना है इसलिये अभी तो मैं चलूॅगा। फिर मिलते हैं, अच्छा विदा।"

मॉ ने पूछा — "पर तू जा कहॉ रहा है बेटा?"

लड़का बोला — "यह मैं आपको अभी नहीं बता सकता।"

पर जब उसकी मॉ उससे बार बार पूछती ही रही तो आखिर उसे सम्राट स्कोरज़ोन की बेटी के बारे में बताना ही पड़ा जिसको उसने किसी भी हालत में किसी को भी बताने से मना कर रखा था।

और अगर उसने बता दिया तो फिर वह उसको कभी नहीं देख पायेगा – और वह तो बहुत सुन्दर थी।

यह सुन कर मॉ बोली — "सुन, मैं तुझे एक टैनब्रे[59] मोमबत्ती देती हूँ। जब वह लड़की सो जाये तो इस मोमबत्ती को जला देना। तब तू इस मोमबत्ती की रोशनी में उसे देखना कि वह कैसी लगती है।"

लड़के ने मॉ से वह मोमबत्ती ले ली और अपने जहाज़ पर चढ़ गया। उसने अपनी छड़ी पर फिर हाथ मारा तो वह सम्राट स्कोरज़ोन के शहर के बन्दरगाह पर था। वहॉ से वह शाही महल गया जहॉ सम्राट की बेटी उसका इन्तजार कर रही थी। रात को वे लोग सोने चले गये।

वह लड़का तो रात होने का और उस राजकुमारी के सोने का ही इन्तजार कर रहा था कि कब वह सोये और कब वह मोमबत्ती जला कर उसकी सुन्दरता को देखे।

सो जब वह सो गयी तो उसने अपनी मॉ की दी हुई मोमबत्ती उठायी, उसको जलाया और उसके चेहरे से उसका परदा उठाना शुरू किया।

पर तभी मोमबत्ती के पिघलते हुए मोम की एक बूँद उस लड़की के चेहरे के ऊपर गिर पड़ी जिससे वह जाग गयी और चिल्लायी —

[59] Tanbrae candle

"दगाबाज, तुमने मेरा भेद खोल दिया अब तुम मुझे कभी आजाद नहीं करा पाओगे। उफ़ बहुत मुश्किल है।"

लड़का बोला — "मुझे बहुत अफसोस है पर फिर भी मैं तुमको आजाद कराने की पूरी कोशिश करूँगा। क्या कोई और रास्ता नहीं है?"

राजकुमारी बोली — "है, मगर बहुत कठिन है। तुम जंगल जाओ और उस जादूगर से जा कर लड़ो जिसने हम सबके ऊपर यह जादू कर रखा है और उसे मार दो। तभी हम सब आजाद हो सकते हैं।"

"और उसको मारने के बाद?"

"उसको मारने के बाद तुम उस जादूगर का पेट खोलोगे तो उसमें तुमको एक खरगोश मिलेगा। उस खरगोश को भी काट दोगे तो उसमें तुमको एक फाख्ता[60] मिलेगी।

फाख्ता को भी काट दोगे तो उसके अन्दर तुमको तीन अंडे मिलेंगे। उन अंडों की तुम अपनी जान की तरह से हिफाजत करना और उनको यहाँ ले आना। बस ध्यान रखना कि वे टूटें नहीं।

तभी सारा शहर और हम सब इस जादू से आजाद हो पायेंगे नहीं तो हम सब इस जादू के असर में हमेशा के लिये पड़े सड़ते रहेंगे

[60] Translated for the word "Dove" – see its picture above.

और हमारे साथ साथ तुम भी। यह छड़ी लो और जा कर उससे लड़ो।"

लड़के ने उससे वह छड़ी ली और वहॉ से चल दिया। रास्ते में उसको गायों का एक झुंड मिला। वह उन गायों के मालिक से मिला और बोला — "जनाब क्या आप मुझे थोड़ी सी डबल रोटी देंगे? मैं यहॉ खो गया हूँ और बहुत भूखा हूँ।"

गायों के मालिक ने उसे खाना खिलाया और उसको अपने पास गाय चराने के लिये चरवाहा रख लिया। उसके पास कई और चरवाहे भी थे।

एक दिन गायों के मालिक ने उन सब चरवाहों से कहा — "इन गायों को घास के मैदान में चराने के लिये ले जाओ पर जो कुछ भी तुम करो सो करो पर तुम उनको जंगल में भटकने मत देना। क्योंकि वहॉ एक जादूगर रहता है जो आदमियों को ही नहीं मारता बल्कि गायों को भी मार देता है।"

वह लड़का गायों का एक झुंड ले कर चला गया और जब गायें जंगल के पास पहुँचीं तो उसने उनको चिल्ला कर उसी जंगल में भेज दिया जिसमें गायों के मालिक ने उनको भेजने के लिये मना किया था।

मालिक को जब यह पता चला तो उसने पूछा कि अब उनको उस जंगल में से निकाल कर लायेगा कौन। उधर कोई भी चरवाहा

जाने के लिये तैयार नहीं था सो मालिक ने उसी नये चरवाहे को उस जंगल में उन गायों को लाने के लिये भेज दिया।

साथ में उसने उसके साथ एक लड़का और भी भेज दिया। वे जंगल में घुसे तो उस साथ में गये लड़के को बहुत डर लगा।

उधर जादूगर ने जब गायों को अपने जंगल में देखा तो वह गुस्से के मारे आग बबूला हो गया। उसने लोहे की एक छड़ निकाली और उसको ले कर बाहर आया। उस छड़ में छह कॉटे लगे हुए थे।

वह लड़का तो उस जादूगर को देख कर इतना डर गया कि वह एक बड़ी सी झाड़ी में छिप गया। पर वह नया चरवाहा वहीं खड़ा रहा और उस जादूगर के अपने पास तक आने का इन्तजार करता रहा।

वह जादूगर उस लड़के के पास आ कर बोला — "ओ गद्दार, तेरी यह हिम्मत कैसे हुई कि यहॉ आ कर तू मेरा जंगल बरबाद करे?"

नया चरवाहा बोला — "मैं यहॉ तुम्हारा केवल जंगल ही बरबाद करने नहीं आया बल्कि उसको बरबाद करने के साथ साथ तुमको भी मारने आया हूँ।"

और फिर दोनों में लड़ाई शुरू हो गयी। वे दोनों काफी देर तक लड़ते रहे। सारा दिन लड़ते लड़ते वे थक तो गये पर इस लड़ाई में किसी को खरोंच तक नहीं आयी।

तब वह जादूगर बोला — "अगर मैंने डबल रोटी के साथ सूप और शराब पी ली होती तो मैंने तुझे सूअर की तरह काट डाला होता।"

इस पर नये चरवाहे ने जवाब दिया — "अगर मैंने दूध और डबल रोटी खा ली होती तो मैंने तो तेरा सिर ही काट डाला होता।"

फिर दोनों ने एक दूसरे को विदा कहा और अगले दिन अपनी लड़ाई फिर से जारी रखने का वायदा करके वहाँ से चले गये।

अगले दिन नये चरवाहे ने अपनी गायें इकट्ठी कीं, अपने साथ आये लड़के को लिया और बाड़े में आ गया। उन सबको ज़िन्दा देख कर किसी के मुँह से एक शब्द भी नहीं निकला।

लड़के ने उन सबको नये चरवाहे और जादूगर के बीच हुई लड़ाई का पूरा हाल सुनाया। उसने उन लोगों के सामने उनमें आपस में कहे गये शब्द भी बार बार दोहराये।

उसने जादूगर की इच्छा भी बतायी कि अगर उसने डबल रोटी का सूप और शराब पी ली होती तो वह नये चरवाहे को सूअर की तरह काट डालता। और नये चरवाहे की इच्छा भी बतायी कि अगर नये चरवाहे ने दूध और डबल रोटी खा ली होती तो वह उसका सिर काट डालता।

यह सुन कर गायों के मालिक ने अपने एक नौकर को नये चरवाहे के लिये डबल रोटी और दूध लाने का हुकुम दिया और उसको उनको अपने साथ जंगल ले जाने के लिये कहा।

सो अगले दिन उस नये चरवाहे ने डबल रोटी और दूध लिया और अपनी गायें चराने जंगल चल दिया। उधर वह जादूगर भी आ गया। दोनों की लड़ाई फिर से शुरू हो गयी।

जब उनकी लड़ाई अपने पूरे ज़ोर पर थी तो जादूगर बोला — "अगर मैंने डबल रोटी के साथ सूप और शराब पी ली होती तो मैं तुमको सूअर की तरह काट डालता।" पर वहाँ डबल रोटी सूप और शराब तो थी ही नहीं।

इस पर नया चरवाहा बोला — "अगर मैंने दूध और डबल रोटी खा ली होती तो मैं तेरा सिर काट डालता।"

और उसी समय उसके साथ आये लड़के ने उसको एक बालटी भर दूध और डबल रोटी दे दी। नये चरवाहे ने एक डबल रोटी खायी और उस बालटी में से एक बड़ा सा घूँट दूध पिया और फिर तुरन्त ही उस जादूगर के सिर पर एक ज़ोर का घूँसा मारा। घूँसा खा कर जादूगर नीचे गिर पड़ा और मर गया।

उसने तुरन्त ही जादूगर का पेट खोला तो उसमें उसे एक खरगोश मिला। खरगोश को काटा तो फाख्ता मिली और फाख्ता को खोला तो उसमें उसके तीन अंडे मिले।

उसने वे तीनों अंडे निकाले और उनको सँभाल कर दूर रख दिया। अपनी गायों को हॉक कर वह बाड़े में ले गया। वहॉ उसका खूब ज़ोर शोर से स्वागत हुआ।

गायों का मालिक उसको अपने खेत पर रखना चाहता था पर उस नौजवान ने मना कर दिया। उसने जादूगर का जंगल गायों के मालिक को भेंट कर दिया और खुद उसको विदा कह कर वहॉ से चला गया।

उसने जंगल में रखे फाख्ता के वे तीनों अंडे उठाये और अपने शहर चल दिया। जब वह अपने शान्त शहर में वापस आया तो वह तुरन्त ही शाही महल में गया।

वह राजकुमारी उससे मिलने के लिये बाहर तक दौड़ी आयी और उसका हाथ पकड़ कर उसको अन्दर ले गयी। वह उसको सम्राट के छिपे हुए कमरे में ले गयी।

वहॉ उसने अपने पिता का ताज उठाया और उस नौजवान के सिर पर रख दिया और बोली — "आज से तुम इस शहर के बादशाह हो और मैं तुम्हारी रानी।"

फिर वह उसको महल के छज्जे पर ले गयी वहॉ जा कर उसने वे तीनों अंडे अपने हाथ में लिये और बोली — "लो, इसमें से एक अंडा अपने दॉये हाथ की तरफ फेंक दो, दूसरा अंडा अपने बॉये हाथ की तरफ फेंक दो और तीसरा अंडा बिल्कुल अपने सामने की तरफ फेंक दो।"

जैसे ही उसने वे तीनों अंडे फेंके शहर के सारे लोगों ने बात करना शुरू कर दिया। सारा शहर शोर शराबे से गूँज उठा। लगता था जैसे सोया शहर जाग गया हो। बच्चे शोर मचाने लगे, गाड़ियॉ सड़क पर दौड़ने लगीं, सेना अपने आपको सॅभालने लगी, चौकीदार बदलने लगे और सब एक साथ चिल्लाये "सम्राट की जय हो। सम्राट ज़िन्दाबाद"।

राजकुमारी ने उस नौजवान से शादी कर ली और वे ज़िन्दगी भर राजा और रानी रहे – पर हम लोग तो अभी भी गरीब हैं।

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

36 पुस्तकें www.Scribd.com/Sushma_gupta_1 पर उपलब्ध हैं।

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।
Write to :- E-Mail : hindifolktales@gmail.com

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें ई–मीडियम पर सोसायटी औफ फौकलोर, लन्दन, यू के, के पुस्तकालय में उपलब्ध हैं।
Write to :- E-Mail : thefolkloresociety@gmail.com

1 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं — 10 लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — 45 लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।
To obtain them write to :- E-Mail drsapnag@yahoo.com

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — प्रभात प्रकाशन
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — प्रभात प्रकाशन
4 शेबा की रानी मकेडा और राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
5 राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
6 बंगाल की लोक कथाऐं — नेशनल बुक ट्रस्ट

नीचे लिखी पुस्तकें रचनाकार डाट आर्ग पर मुफ्त उपलब्ध हैं जो टैक्स्ट टू स्पीच टैकनोलोजी के द्वारा दृष्टिबाधित लोगों द्वारा भी पढ़ी जा सकती हैं।

1 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/08/1-27.html
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/08/2-1.html
3 रैवन की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1.html
4 रैवन की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/09/2-1.html
5 रैवन की लोक कथाऐं–3
http://www.rachanakar.org/2017/09/3-1-1.html
6 इटली की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1_30.html

7 इटली की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/10/2-1.html
8 इटली की लोक कथाऐं–3
http://www.rachanakar.org/2017/10/3-1.html
9 इटली की लोक कथाऐं–4
http://www.rachanakar.org/2017/10/4-1.html
10 इटली की लोक कथाऐं–5
http://www.rachanakar.org/2017/10/5-1-italy-lokkatha-5-seb-wali-ladki.html
11 इटली की लोक कथाऐं–6
http://www.rachanakar.org/2017/11/6-1-italy-ki-lokkatha-billiyan.html
12 इटली की लोक कथाऐं–7
http://www.rachanakar.org/2017/11/7-1-italy-ki-lokkatha-kaitherine.html
13 इटली की लोक कथाऐं–8
http://www.rachanakar.org/2017/12/8-1-italy-ki-lokkatha-patthar-se-roti.html
14 इटली की लोक कथाऐं–9
http://www.rachanakar.org/2017/12/9-1-italy-ki-lok-katha-do-bahine.html
15 इटली की लोक कथाऐं–10
http://www.rachanakar.org/2017/12/10-1-italy-ki-lok-katha-teen-santre.html
16 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_54.html
17 चालाक ईकटोमी
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_88.html
18 नौर्स देशों की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2018/10/1.html
19 नौर्स देशों की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2018/12/2.html

नीचे लिखी पुस्तकें जुगरनौट डाट इन पर उपलब्ध हैं
https://www.juggernaut.in/authors/2a174f5d78c04264af63d44ed9735596
1 सोने की लीद करने वाला घोड़ा और अन्य अफ्रीकी लोक कथाऐं
2 असन्तुष्ट लड़की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
3 रैवन आग कैसे लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
4 रैवन ने शादी की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
5 कौआ दिन लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated on Dec 27, 2018

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **1500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
दिसम्बर **2018**